GD GOENKA SCHOOL

Thrive. For Life.

किशोर दर्पण

पाँचवाँ संस्करण-सितंबर, 2025

वार्षिक पत्रिका

जी • डी • गोयंका पब्लिक स्कूल, सेक्टर-10 द्वारका

विषय सूची

कविता संकलन

1) मैं और मेरे सपने 13
2) मन की शक्ति 14
3) ललकार 15
4) किताबों में बसी दुनिया 16
5) गुरु महान 17
6) शुक्रिया 18
7) वृद्धाश्रम:एक अनुभवात्मक यात्रा 19
8) धरा 20
9) मुझे छुट्टी चाहिए! 21
10) प्रताप की अमरगाथा 22
11) पेड़ हमारे सच्चे दोस्त 23
12) प्रकृति 24
13) प्रकृति व ऊर्जा संरक्षण..25
14) क्या है जीवन ? 26
15) रामायण:एक महाकाव्य 27
16) सपने सलोने 31
17) जीवन दायक पेड़ 32
18) प्रकृति का संदेश 32
19) वन और हरियाली 33
20) मैं और मेरा शहर 34
21) जीवन का झरना 35
22) नया हैदराबाद 36
23) भारत की वीर बालिका 37
24) सूरज बनो 38

25) रोशनी का राज 39
26) पिंजरे का परिंदा 40
27) मेरे जगन्नाथ 41
28) वीरों की गाथाएँ 42
29) अपनी रेल 44
30) मेरे पापा 45
31) पर्यावरण का संदेश 46
32) एक-एक 46
33) प्रकृति से खिलवाड़ 47
34) प्रकाश 48
35) गर्मी आई फल ले आई 49
36) जादू की छड़ी 50
37) नैतिक मूल्य और आज का युग..........51
38) ऊँचा आसमान 51
39) सिसकती उम्मीद 52
40) ऋतुराज मधुमास 53
41) मुस्कुराएँ 53
42) पंचतत्व 54
43) मन तू क्या चाहता है ? 55
44) आसमान 56
45) अच्छा, चलता हूँ। 57

कहानी संकलन

46) कागज़ की नाव 59
47) लालची सर्प 60

48) एक पन्ने की उड़ान 61
49) निडर सैनिक 62
50) ज़िम्मेदारी 63
51) ताश के पत्ते 65
52) नहले पर दहला 66
53) सुंदर किताब 67

यात्रा वृतांत

54) सिंगापुर की यात्रा - मेरी यादगार मार्च की छुट्टियाँ 69
55) राजस्थान के रंग 71
56) हैदराबाद यात्रा वृतांत 72
57) वैष्णो देवी की यात्रा 73
58) प्रकृति और ऊर्जा संरक्षण यात्रा 74
59) मेरी गर्मियों की छुट्टियाँ 75
60) शिमला-पहाड़ों की रानी 76

लेख

61) मेरे आदर्श - बाबा साहब भीमराव अंबेडकर 78
62) कौन है वह वीर? 79
63) संगति का प्रभाव 80
64) ऊर्जा संरक्षण 81
65) विवेक 82

संपादक की कलम से

'किशोर दर्पण' के पूर्व संस्करणों की सफलता तथा पाठकों के द्‌वारा प्रशंसा से प्रेरित होकर इसका पाँचवाँ संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। यह एक मिश्रित विशेषांक है। यह विशेषांक कहानियाँ, कविताएँ, लेख, यात्रा वृतांत आदि विभिन्न साहित्य विधाओं से परिपूर्ण है। भवानी प्रसाद मिश्र जी ने कहा है, "जिस तरह हम बोलते हैं, उस तरह तू लिख,और इसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख। चीज़ ऐसी दे कि जिसका स्वाद सिर चढ़ जाए बीज ऐसा बो कि जिसकी बेल बन बढ़ जाए।।" साहित्य की दुनिया हमारे आस-पास ही बिखरी होती है। कहानियाँ और कविताएँ हमारे आस-पास बनती हैं। लेखक तथा कवि हृदय के नेत्र उस अनुभव को अपनी कलम से शब्दों में गढ़ते हैं।

'किशोर दर्पण' साहित्य के अलावा कला की भी विशेष सामग्री प्रस्तुत कर रही है जो आपको एक अलग ही दुनिया के सफ़र पर ले जाती है। जहाँ रोमांच है, हँसी-ठिठोली है, सुंदर यादें हैं, जीवन के विभिन्न रंग हैं, प्रकृति का सौंदर्य है, बचपन का भोलापन है, हृदय को छूने वाली यादें हैं। जो अनुभवों के एक नए संसार से हमारा परिचय करवाती है। पत्रिका को पढ़ते हुए आपकी उँगलियाँ थमेंगी नहीं, पृष्ठ रुकेंगे नहीं। इस यात्रा का पहला पृष्ठ आपको अंतिम पन्ने तक बाँधे रखेगा। कभी कोई सामने बैठा हुआ महसूस होगा तो कोई आपकी बाँह थामे अपने सफ़र की सैर पर आपको ले जाएगा। यही सुंदरता है साहित्य के विभिन्न रंगों की जिन्हें आप करीब से महसूस करेंगे। आइए कदम बढ़ाते हैं 'किशोर दर्पण' के अनोखे संस्करण की ओर, एक नए रोमांचक अनुभव को अपने हृदय में समेटने के लिए। एक अनोखे सफ़र का आरंभ है, हिंदी की पत्रिका 'किशोर दर्पण'।

विशेष आभारः

हिंदी विभाग (संपादन एवं संकलन हेतु)

जी. डी. गोयंका पब्लिक स्कूल, द्‌वारका, दिल्ली

चित्रांकन हेतु विशेष आभार

पल्लवी- छठी 'सी'

जाहनवी खंडेलवाल-छठी 'ए'

आराध्या वर्मा- आठवीं 'ई'

शनाया माथुर- आठवीं 'ई'

सृष्टि शर्मा- आठवीं 'डी'

सूर्यान्शी- आठवीं 'डी'

एड्रियन नोएल टिग्गा- आठवीं 'डी'

आन्या - नौवीं 'एफ़'

शिनाया - नौवीं 'एफ़'

त्रिशा- नौवीं 'ए'

हरतेज सिंह- नौवीं 'बी'

जीयाना सिंह- नौवीं 'सी'

सृष्टि गुप्ता- नौवीं 'बी'

तिशिका गुप्ता- नौवीं 'बी'

मोहम्मद जुनैद- नौवीं 'बी

माओली- नौवीं 'डी'

एंजल टंडन- नौवीं 'एफ़'

स्वस्ति वर्मा- दसवीं 'एफ़'

अनन्या अरोरा- दसवीं 'ए'

प्रिशा कौर- दसवीं

वेदांतिका -दसवीं

प्रकृति सिंह- दसवीं 'सी'

शुभकामना संदेश

VEDITHA REDDY, IAS
Director, Education & Sports

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Old Secretariat
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail : diredu@nic.in

सत्यमेव जयते

शुभकामना संदेश

प्रिय बच्चों,

लेखन सिर्फ़ शब्दों को काग़ज़ पर उतारना नहीं है – यह दिल की बात कहने का एक अनमोल जरिया है। जब हम लिखते हैं, तो हम अपने भीतर के संसार को दुनिया के सामने लाते हैं। यह प्रक्रिया हमें न केवल खुद को बेहतर समझने में मदद करती है, बल्कि हमारी सोच को गहराई और दिशा भी देती है।

मुझे अपार प्रसन्नता है कि जी. डी. गोयंका पब्लिक स्कूल, द्वारका के बच्चों ने हिंदी वार्षिक पत्रिका "किशोर दर्पण" में इतनी भावपूर्ण और सुंदर रचनाएँ लिखी हैं।यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि आप सबके सपनों, जिज्ञासाओं और संवेदनाओं की मधुर अभिव्यक्ति है।

आप सभी को इस अद्भुत प्रयास के लिए दिल से बधाई! मुझे पूरा विश्वास है कि आप आगे भी अपनी लेखनी से न केवल खुद को, बल्कि इस समाज को भी एक नई दृष्टि देंगे। आपकी यह लगन और सृजनशीलता पाठकों के मन में हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति अपनापन और प्रेरणा भर देगी।

आपकी यह प्रतिभा आने वाले समय में निश्चित ही नई ऊँचाइयाँ हासिल करेगी। इस सुंदर पहल के लिए आप सभी छात्रों, शिक्षकों और सहयोगियों को मेरी ओर से ढेरों शुभकामनाएँ और स्नेह।

शुभकामनाओं सहित,

Veditha

(वेदिता रेड्डी)
शिक्षा निदेशक, दिल्ली

शुभकामना संदेश

प्रिय नन्हे सृजनकारों,

शब्द जब मन की धरती पर बरसते हैं, तो विचारों की कोंपलें अंकुरित होती हैं।
तुम्हारी लेखनी में वही स्पर्श है — कोमल, पर गहराइयों से भरा।

"किशोर दर्पण" का हर पृष्ठ मानो एक दर्पण है — जिसमें झलकते हैं तुम्हारे स्वप्न, संवेदनाएँ और नन्हे-नन्हे सवाल, जिनमें छुपे हैं बड़े अर्थ।
क्या ही सुखद है यह देखना कि इतनी छोटी उम्र में तुम्हारे भीतर एक कवि, एक विचारक, एक कलाकार जाग चुका है।

तुम्हारे अक्षर सिर्फ़ वाक्य नहीं रचते, वे एक नई दृष्टि, एक नई भाषा और एक नए युग की दस्तक हैं।
हिंदी की यह उजास तुम्हारे भीतर जलती रहे — यही मेरी प्रार्थना है।

तुम्हारी कल्पनाएँ जैसे बांसुरी की धुन — सहज, सरल, फिर भी हृदय को छू लेने वाली।
तुम्हारी संवेदनाएँ जैसे सावन की पहली बूंद — कोमल, पर अमिट छाप छोड़ने वाली।

बधाई हो, छोटे दीपों!
तुम्हारी यह लौ कभी मंद न हो,
तुम्हारा यह साहस कभी थमे नहीं।
कलम चलती रहे — आत्मा से, प्रेम से, और सत्य से।

तुम सबको मेरी ढेरों शुभकामनाएँ,

Jaya Jodwani

— जया जादवानी
(हिंदी कवयित्री)

शुभकामना संदेश

प्रिय छात्रों

यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आपके विद्यालय में आप सबकी प्रतिभाओं को निखारने हेतु 'किशोर दर्पण' नामक एक पत्रिका निकाली जाती है, जिसमें आप सबकी प्रतिभाओं को उचित स्थान दिया जाता है तथा आपकी प्रतिभाओं से सभी को अवगत भी कराया जाता है। आप सभी छात्रों की रचनात्मकता प्रशंसनीय है । आप सबकी रचनात्मक प्रतिभाओं में नित निखार आए यही आप सबके लिए शुभकामनाएँ हैं। खुश रहिए और यूं ही रचनात्मक बने रहिए ।

धन्यवाद

शम्भू शिखर

(अंतरराष्ट्रीय हास्य कवि)

शुभकामना संदेश

मैं लिखता हूँ जो मैंने जिया, मैं लिखता हूँ जो मेरी आँखों ने पिया,
हाँ! मैं एक लेखक हूँ, एक कवि हूँ।
मैं बनाता हूँ कहानियों को, कविताओं को रंगों से सजाता हूँ,
इंतज़ार करता हूँ किसी नई कृति का, हाँ मैं एक चित्रकार हूँ।

'किशोर दर्पण' के नवीनतम अंक के लिए मैं सभी नन्हें लेखकों, कवियों और उनमें प्राण डालने वाले सभी चित्रकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ। चार वर्षों की सफलता के बाद 'किशोर दर्पण' का पाँचवाँ संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। मैं उन सभी विद्यार्थियों को बधाई देती हूँ जो हिंदी भाषा के प्रति अपनी रुचि को दर्शाते हुए लिखने का सफ़ल प्रयास करते हुए हर साल इस पुस्तक को एक नया चेहरा देते हैं जो पहले से भी अधिक सुंदर बनकर हम सब के समक्ष आता है। हमारी कोशिश है कि हम विद्यार्थियों को संपूर्ण शिक्षा प्रदान करें जिससे वे एक ज़िम्मेदार नागरिक बनने के साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति कर सकें। यह पुस्तक इसी राह का एक सफल प्रयास है।

मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल को धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने विद्यार्थियों की रचनात्मकता और विचारों को प्रस्तुत करने के लिए यह मंच प्रदान किया है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से हमारे विद्यार्थियों को प्रेरणा मिलेगी और वे भविष्य में इसी प्रकार मनमोहक रचनाएँ लिखने में रुचि लेंगे । मैं आशा करती हूँ कि आप सब को विद्यार्थियों, संपादकों, सह संपादकों, लेखकों व चित्रकारों का काम पसंद आएगा। पत्रिका से जुड़े तमाम विद्यार्थियों और शिक्षकों को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ।

श्रीमती अनीता खोसला
प्रधानाचार्या
जी. डी. गोयंका पब्लिक स्कूल, द्वारका

शुभकामना संदेश

हर पन्ना कुछ कहता है, हर शब्द में है जान,
किशोर मन की कल्पनाओं का, यही है सच्चा प्रमाण।

'किशोर दर्पण' का यह पाँचवाँ संस्करण हमारे विद्यार्थियों की साहित्यिक यात्रा का एक और स्वर्णिम अध्याय है। जब हमने इस पत्रिका की शुरुआत की थी, तब यह केवल एक प्रयास था छात्रों की रचनात्मकता को एक मंच देने का। आज यह प्रयास एक समृद्ध परंपरा बन चुका है।

इस अंक में आपको विद्यार्थियों की भावनाओं की गहराई, विचारों की ऊँचाई और कल्पनाओं की उड़ान—सभी एक साथ देखने को मिलेंगी। यह केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि उन युवा मनों की झलक है जो समाज, शिक्षा, प्रकृति, और मानवीय संवेदनाओं को लेकर सजग हैं और जिन्हें अभिव्यक्त करना जानते हैं।

हमें गर्व है कि हमारे विद्यालय के शिक्षकगण और छात्रगण हिंदी साहित्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और समर्पण के साथ इस रचनात्मक प्रयास में निरंतर योगदान दे रहे हैं। यह पत्रिका केवल विद्यालय की नहीं, बल्कि हिंदी भाषा की समृद्धि में भी एक छोटा किंतु सशक्त प्रयास है।

मैं 'किशोर दर्पण' के इस पंचम संस्करण से जुड़े सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और संपादकीय टीम को हृदय से बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि यह अंक भी अपने पूर्ववर्तियों की भाँति सभी पाठकों के मन को छू पाएगा।

सस्नेह,
श्रीमती बिमला बिष्ट
उप प्रधानाचार्या
जी. डी. गोयंका पब्लिक स्कूल, द्वारका

कविता संकलन

वर्णमाला में बहता नदी का दर्द

अबोध और अकुलाई-सी
आक्रोश में भरकर
इतराती बलखाती नदी बोली,
ईश्वर की कृति हूँ मैं,
उतम गुणों का भंडार हूँ मैं,
ऊपर से तुमने मुझे प्रदूषित कर दिया।
ऋषियों की पवित्र भागीरथी हूँ मैं,
एकाकी गुणों का भंडार हूँ मैं, चली थी तुम्हारी विपदाओं को हरने,
ऐसी भी क्या मजबूरी थी जो तुमने नोच डाला।
ओह ! मैं ठगी गई
औरों को क्या कहूँ, अपनों से मिटाई गई,
अंग-अंग कराह उठा है मेरा,
अ: तुम्हें थोड़ी-सी भी दया नहीं आई,
कहा था न भागीरथ मैंने तुमसे,
खा लेगी नहीं,निगल जाएगी यह दुनिया मुझको,
गल जाएँगे अंग-प्रत्यंग
घर से बेघर हो जाऊँगी मैं,
चली तो मैं अकेली ही थी,
छोटी-सी बात की इतनी बड़ी सज़ा
जगह हो यदि दिल में
झगड़े की नहीं है कोई वजह,
टकराना नहीं है इसका समाधान,
ठकराए जाने पर नहीं उठ पाओगे
डगमगा कर लड़खड़ा जाओगे,
ढक लो मन की कड़वाहट,
तोड़ दो सारे बंधन,
थाम लो मेरी बाँहे, आगोश में ले लो मुझे,
दिखला दो ऊँची अट्टालिकाएँ,
धड़कनों को मिल जाएगी सिहरन,
नादान हो इतना भी नहीं जानते,
पुरूष और प्रकृति अलग नहीं है।
फूलों की सुगंध अलग नहीं है,
बन जाओ तुम सिर्फ़ मेरे,
भला ऐसा भी रूठना क्या,
मनु की संतान हो ,
यह तुम्हारे जीवन का प्रश्न है,
रचनाकार है तुम्हारे पूर्वज,
लोभ की पराकाष्ठा में मत डूबो,
विश्वास की प्रतिमा हो तुम,
शर्म से झुक गई तुम्हारी गर्दन,
षड्यंत्रों के इस मायाजाल में,
सदैव औचित्य को जानो तुम,
हमसे तुम हो तुम से हम हैं,
क्षणिक स्वार्थ के चक्कर में,
त्रास नदी का मत भोगो तुम,
ज्ञानी ऋषियों के वंशज हो,
यह बात कभी न भूलो तुम।

(तारकेश्वरी मिश्रा
हिंदी विभाग)

1. मैं और मेरे सपने

अनन्या अरोड़ा 'दसवीं-ए'

मैं छोटी-सी लड़की हूँ,

पर सपनों की दुनिया बड़ी।

हर दिन कुछ नया सोचती हूँ,

खुश रहना है बस यही।

मैं गलती करती हूँ रोज़,

फिर भी हार नहीं मानती।

धीरे-धीरे सीख रही हूँ,

अपने-आप से वादा करती।

पढ़ाई हो या खेल का मैदान,

मैं सब में कोशिश करती।

माँ-पापा का नाम चमकाऊँ,

यही सपना मैं हर दिन बुनती।

जब थक जाऊँ, तो चुप रहती,

आँखों में थोड़ा-सा पानी।

पर दिल कहता है फिर से उठ,

तेरे साथ है तेरी कहानी।

समृद्धि पाठक 'आठवीं-सी'

2. मन की शक्ति

मन की शक्ति को समझो तुम,
यह हर मुश्किल को आसान कर देगी।
अगर मन में हो विश्वास गहरा,
तो कोई भी चढ़ाई नहीं चढ़ने से रुक
सकती।

जब तक अंदर की शक्ति को न जानो,
तब तक बाहर की दुनिया तुमसे नहीं
जुड़ेगी।
अगर चाहो तो इस मन से,
संसार की सारी मुश्किलें नष्ट हो जाएँगी।

अपने दिल की सुनो और आगे बढ़ो,
जो भी चाहो उसे पा सकते हो।
मन की शक्ति पर विश्वास रखो,
क्योंकि वही तुम्हें ऊँचाइयों तक ले जाएगी।

वंश सिंह नेगी 'छठी-सी'

3. ललकार

अगर लाहौर बचाना है तो, कभी न करना सीमा पार,
अपना वतन बचाना है तो, कभी न करना सीमा पार।

राणा सांगा जैसे योद्धा, सरहद के इस पार खड़े हैं,
अस्सी घाव लिए तन पर, जो अपने सारे युद्ध लड़े हैं।
उनके भालों से बचना है तो, कभी न करना सीमा पार,
अपना वतन बचाना है तो, कभी ना करना सीमा पार।

गौरी-गजनी के ख्वाबों की, हर दम कसमें खाने वालों,
हमने जो पानी दिया है, उससे प्यास मिटाने वालों।
अगर मर्द के बच्चे हो तो, कभी न करना सीमा पार,
अपना वतन बचाना है तो, कभी न करना सीमा पार
अगर लाहौर बचाना है तो, कभी ना करना सीमा पार।

आध्या मिश्रा 'चौथी-एफ़'

4. किताबों में बसी दुनिया

मैं किताबों की राही हूँ, बस पढ़ती नहीं,

हर कहानी में बहती, खुद को रोकती नहीं।

हर पन्ना एक सपना, हर शब्द है जादू,

जी लूँ हर पल को, यही है मेरा वादा।

कभी हँसी की बारिश, कभी आँसूओं का मेघ,

कभी खुशी का सवेरा, कभी दुखों का संदेश।

कभी प्यार की नर्म छाँव, कभी जंग का शोर,

हर कहानी का हिस्सा बनूँ, दिल से हर दौर।

मैं बस एक ज़िंदगी नहीं जीती,

हर किताब में सौ जिंदगियाँ पीती।

कभी परियों की रानी, कभी वीरों की साथी,

कभी टूटी उम्मीदों में भी, ढूँढू अपनी राहें।

किताबें हैं मेरा जहान, मेरा सबसे प्यारा सफ़र,

हर किस्सा मुझे बनाता है, थोड़ा और बेहतर।

मैं किताबों में खुद को यूँ पाती हूँ,

हर किरदार में अपनी रूह बसाती हूँ।

कहानी खत्म हो जाए फिर भी वो साथ रहें,

मेरी आत्मा में हर शब्द, हर याद बहती रहे।

शिनाया 'नौवीं'

नशरा ख़ान 'दसवीं-ए'

5. गुरु महान

दुनिया के सारे गुरु महान,

प्रथम गुरु 'माँ' तुझे प्रणाम।

ज्ञान के भंडार गुरु हैं,

जीवन के आधार गुरु हैं।

बिना गुरु कभी ज्ञान न आता,

गुरु हमारे विद्या दाता।

कभी डाँट कर कभी प्यार से,

कर देते जो जीवन आसान।

हाँ, वो हैं हमारे गुरु महान।

हे गुरुदेव! आपको शत्-शत्
प्रणाम।

अनय वर्मा 'छठी-डी'

6. शुक्रिया

ऐ ज़िंदगी, शुक्रिया! तूने इस तरह,

मेरे बिखरे शब्दों को कविता बना दिया।

शुक्रिया! कि तूने मेरा हाथ पकड़,

मुझे उस अँधेरे से निकाल दिया।

शुक्रिया! उन हसीन पलों के लिए,

जो शायद कभी मेरे थे ही नहीं।

शुक्रिया! उन दुखों के लिए,

जिसने आज मुझे मज़बूत बना दिया।

शुक्रिया! उस अँधेरे के लिए,

जिसने मुझे रोशनी का महत्त्व समझा दिया।

शुक्रिया! इतने प्यार के लिए

जो बिन माँगे मिल गया।

छोटी-सी जिंदगी है ये मेरे दोस्तों,

माफ़ करना कि मैं तुम्हारा शुक्रिया करना भूल गया।

अनन्या अरोड़ा'दसवीं-ए'

कुवम 'दसवीं-डी'

7. वृद्धाश्रम:एक अनुभवात्मक यात्रा

यह वृद्धाश्रम नहीं, यह तो स्वर्ग है।

आप कहीं बाहर नहीं, यह आपका अपना घर है।

मत सोचिए कि साथ में नहीं हैं अपने,

नए भाई-बहन और दोस्त ही तो दिए हैं रब ने।

यह तो है आपका अपना परिवार,

जहाँ सब करते हैं एक दूसरे से प्यार।

दिन बीत जाते हैं सुहानी याद बनकर,

बस दोस्ती सदा साथ रहती है मुस्कान बनकर।

रहें सब साथ एक दूसरे का हाथ थामकर,

क्योंकि एकता ही तो आप सब का बल है।

यह वृद्धाश्रम तो आपका दूसरा विद्यालय है,

जो भुला देगा कि आपका कोई बीता हुआ कल है।

आपकी जिंदगी की ये बस अगली कक्षा है,

जो एक उम्र एक विचार के सहपाठियों का खूबसूरत रास्ता है।

हम आए हैं आज आपके पास,

पाने आपका प्यार और थोड़ी भिक्षा।

अपनी जिंदगी के अनुभव को निचोड़,

हमारी झोली में भी डाल दें थोड़ी शिक्षा।

अन्विता कौशिक 'आठवीं-डी'

8. धरा

जिसकी गोद में मिलता हमको जीवन,
अन्न, वस्त्र और मकान है।
ये धरा मैया है हमारी, हम धरती की संतान हैं।
माँ जैसे दुःख अनेकों सहती,
पर रहती सदा बन आधार है,
कभी होती बंजर, कभी जलमग्न,
कभी ज्वाला भड़कती अपार है।
फिर भी न करती अलग हमको स्वयं से,
सहती आपदाएँ हज़ार है।
क्योंकि ये धरा मैया है हमारी,
हम धरती की संतान हैं।
आओ मिलकर करें प्रण हम सब,
पहनाएँ मैया को हरियाली की चूनर।
न बदलें प्रवाह नदियों के,
न करें वन्यजीवों को बेघर।
हम सब अभिन्न हिस्सा हैं धरा के,
रखना सदा इनका मान है।
क्योंकि ये धरा मैया है हमारी,
हम धरती की संतान हैं।

अनन्या अरोड़ा'दसवीं-ए'

जैतश्री बत्रा 'चौथी-एफ़'

9. “मुझे छुट्टी चाहिए!”

मम्मी आज न स्कूल भेजो,

मन नहीं है पढ़ने का,

बैग हुआ है बहुत भारी,

मन है बस उड़ने का।

टीचर देती ढेर होमवर्क,

कॉपी भर जाती है,

पढ़ते-पढ़ते नींद आए,

नींद भी फिर भाग जाती है।

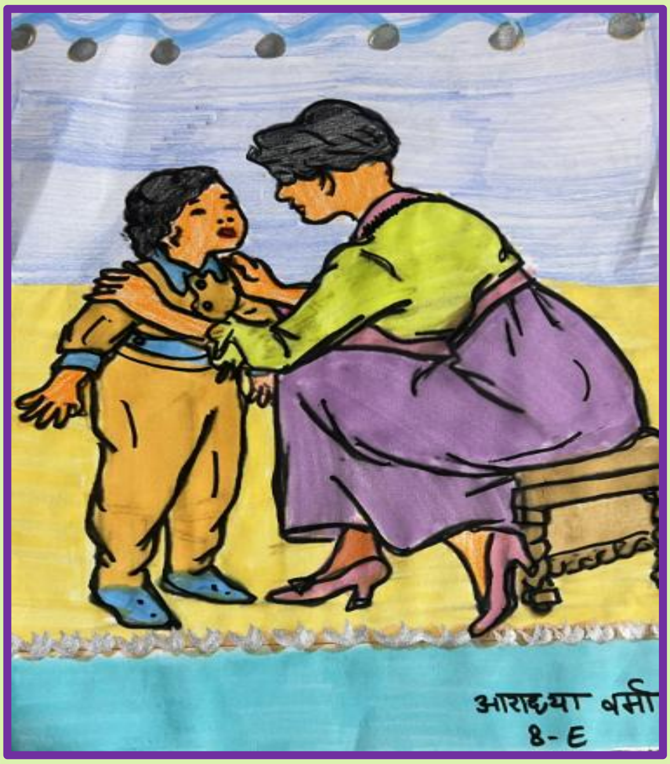

पापा बोले - "जाएगा बेटा",

मम्मी बोली - "जा जल्दी से",

मैं बोला - “आज बारिश होगी”,

फिसलूँगा मैं गली से!

थोड़ी देर तो सब चुप रहे,

फिर मम्मी बोली - "ड्रामा ना कर",

"हर दिन छुट्टी नहीं होती बेटा,

चल स्कूल, अब कर तू फर्ज!"

नमिश सवारिया ‘चौथी-जी’

10. प्रताप की अमरगाथा

राणा तेरी शौर्य गाथा,
बच्चा-बच्चा गाएगा।
हल्दीघाटी की मिट्टी,
माथे टीका लगाएगा।।
चेतक घोड़ा साहसी,
बढ़ता रहा विक्रमी,
कीका के प्राण बचाते,
जान की बाज़ी लगाएगा।
उदयसिंह के सपूत,
और सांगा के वंशज,
मातृभूमि की खातिर,
सर्वस्व मिटवाएगा।
राणा का तेजस भाला,
मुगलों को ललकारा,
यवनों से जद्दोजहद में,
शीश अपना कटवाएगा।
गुलामी की जंज़ीरों से,
मेवाड़ मुक्त करवाएगा।
राजपुताना का वीरा ये,
विश्व पटल पर छाएगा।

लव्या गुरबानी 'सातवीं-सी'

11. पेड़ हमारे सच्चे दोस्त

पेड़ लगाओ, खुश हो जाओ,
हरी-भरी ये धरती बनाओ।
फल-फूल दे, छाया दे,
गर्मी से यह राहत दे।

पंछी गाते डालों पर,
बैठे रहते इधर-उधर।
पेड़ नहीं तो सब सूना,
धरती का हो जाएगा हर कोना।

चलो मिलकर पेड़ लगाएँ,
धरती माँ को सुंदर बनाएँ।
हरियाली हो चारों ओर,
खुशबू फैलेगी हर भोर ।

कुशांक कुमार 'छठी-ए'

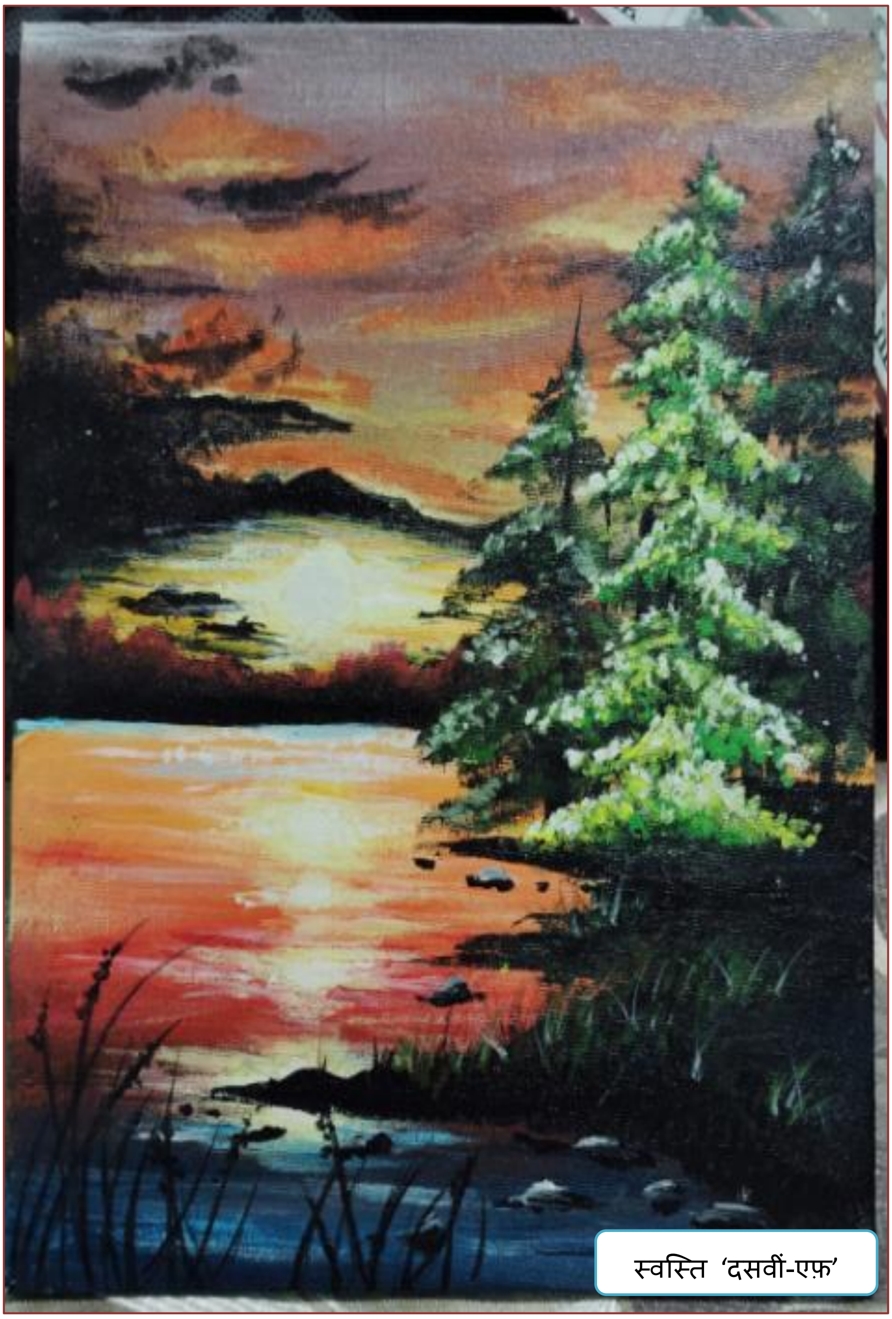

स्वस्ति 'दसवीं-एफ़'

12. प्रकृति

स्वस्ति 'दसवीं-एफ़'

ओह अद्भुत प्रकृति!

तुम बहुत सुंदर हो।

हरे पेड़ों के साथ,

और गुनगुनाती हुई
मधुमक्खियाँ,

हरी घास के मैदान,

साफ़-स्वच्छ बहती हुई नदियाँ,

पक्षियों की ऊँची उड़ान,

फूलों पर मंडराती तितलियाँ,

मेरे विचारों को उड़ान देती हैं।

पानी की दीवारें बहुत ठंडी हैं,

बिल्कुल स्विमिंग पूल की तरह।

मुझे यह प्रकृति बहुत पसंद है!

भगवान हमें यह विशेषताएँ दें।

यशस्वी सिंह 'छठी-सी'

13. प्रकृति व ऊर्जा संरक्षण

सुबह की किरण जब छू लेती है धरती,
प्रकृति की गोद में सजा है संसार प्यारा,
हरे पेड़ों और खिलते फूलों का है उपहार हमारा।
चहकते पंछियों की मधुर तान सुन कर मन हो जाए मस्त,
धरती माँ की शान बना कर रखे,
यही है हमारा सच्चा सरपरस्त।
सौर और पवन से जग उठे,
मिल कर दे जीवन में नई रीत।
हो हर दिन उजाला इतना खूब,
बचत से बने उज्ज्वल कल के दीप।
हर बूँद, हर कण में बसी है,
जीवन की अनमोल कहानी।
आओ मिल कर करें संकल्प,
बताएँ इसे सदा अपनी ज़ुबानी।
जागो साथी, न करो प्रकृति को रुष्ट,
प्रकृति व ऊर्जा बचाओ, यही है हमारा संदेश स्पष्ट।
धरती माँ के हर कोने में,
फैलाओ स्वच्छता और प्यार का इशारा।
हमारे छोटे-छोटे प्रयासों से बनेगा,
कल सुनहरा हमारा।

जारूद सोफ़ी 'छठी-ई'

14. क्या है जीवन ?

अदभुत यात्रा जीवन की,

कुछ सुंदर पल, कुछ कठिनाइयों से भरी

जीवन है शिखर को पाना,

जैसे तूफ़ानी समुद्र में नाव का गोते खाना।

जीवन जैसा इक उपहार,

मिलता नहीं यह बार-बार,

धूप-सा चंचल, छाँव-सा कोमल,

ये जीवन जैसे माँ का आँचल।

कभी रंग-बिरंगा है तितली की तरह,

तो कभी मधुर है कल-कल झरने की तरह।

जीवन मानों फूलों का गुलदस्ता,

जैसे सुंदर सपनों से भरा इक बस्ता।

इस पथ पर तुम चलते जाओ,

हर क्षण को तुम गले लगाओ।

छोटी-छोटी खुशियाँ पा लो,

हर पल जी लो, हँस लो, गा लो।

प्रखर नैथानी 'आठवीं-डी'

15. रामायण: एक महाकाव्य

सरयू तट पर एक अयोध्या
महाराज दशरथ जिसके राजा
थी उनकी तीन रानी
कौशल्या केकई सुमित्रा जानी
पर उन्होंने पुत्र सुख ना पाया
इस बात का उनको दुःख ही भाया
उन्होंने करवाया यज्ञ
जिसमें चाहा पुत्र वरदान
कुछ ऐसे थे उनके नाम
शत्रुघ्न, भरत, लक्ष्मण और राम
गुरुकुल में बड़े हो गए सारे
फिर वह सब अयोध्या पधारे
आए ऋषि विश्वामित्र, कहा
चाहिए मुझे राम-सौमित्र
ऋषियों की करी उन्होंने सेवा
राक्षसों के साथ लड़े समान देवता
उससे बहुत दूर थी एक मिथिला
उसकी राजकुमारी थी सीता
माता-पिता थे राजा जनक-सुनैना
बहनें थीं श्रुतिकीर्ति, मांडवी, उर्मिला
सीता के स्वयंवर का हुआ एलान
इस समय मिथिला पहुँचे राम
कार्य महादेव का पिनाक उठाना

सब चाहते सिया साथ जीवन बिताना
माता के मंदिर में मिले राम-सिया
देवताओं ने अपना आशीष दिया
स्वयंवर में दी सबने परीक्षा
सीता को थी राम की प्रतीक्षा
द्वार खुले और राम पधारे
देखते रह गए राजा सारे
राम ने धनुष तो उठाया
टूटा धनुष जब प्रत्यंचा चढ़ाया
अहंकारी परशुराम आए लिए शस्त्र
लक्ष्मण ने क्रोधित उठा लिए अस्त्र
हुई फिर लक्ष्मण पशुपति की लड़ाई
श्री राम ने की मनाही
जानकी ने वरमाला डाली
राम की हो गई फिर चंद्रधारी
देखो यह सुंदर संजोग ज़रा
मिथिला की चार कुमारियाँ
अयोध्या के चार कुमार
शत्रुघ्न-श्रुतिकीर्ति, लक्ष्मण-उर्मिला
भारत-मांडवी और राम-सिया
हुआ विवाह खुशी से संपन्न
अब हुआ अयोध्या प्रस्थान

कैकई ने माँगा दशरथ से यह वचन
मेरे भरत को मिले सिंहासन
राम को मिले 14 वर्ष वनवास
पूरी करो यह मेरी माँग
राम ने स्वीकार यह भाग्य किया
सीता ने भी किया राजमहल का त्याग
लक्ष्मण भी चले उनके साथ
राम, लक्ष्मण, जानकी चित्रकूट आए
अयोध्या का दुख बढ़ता ही जाए
महाराज दशरथ ने प्राण गँवाए
भरत ढूँढने निकले अपने राम भाई
पादुकाएँ ली, किया एक वचन
14 वर्ष में आओगे अयोध्या तुम
14 वर्ष का होने वाला था अंत
थी उनकी कुटिया वह रहते जैसे-संत
शूर्पणखा ने देखी राम की सुंदरता
बोली मेरे साथ खुश रहोगे सदा
उसने जो देखी सीता रूपवान
वह चाहने लगी सीता संहार
लक्ष्मण ने शूर्पणखा की नाक काटी
शूर्पणखा रोते हुए भागी
शूर्पणखा गई भाई रावण के पास
बोली सीता की सुंदरता खास
सीता को अपना बनाने की चाह
रावण भूल गया धर्म की राह

स्वर्ण हिरण देखा सीता ने
बोली श्री राम मुझे यह चाहिए
राम ने सीता से ली विदाई
सीता की रक्षा करना लक्ष्मण भाई
उनको ज्ञात नहीं था कि
स्वर्ण हिरण था दुष्ट मारीच
राम की ध्वनि में 'लक्ष्मण' पुकारा
सीता के आदेश से लक्ष्मण हारा
लक्ष्मण ने खींची लक्ष्मण रेखा
बोला भाभी इसके भीतर रहना
लक्ष्मण जाते ही रावण आया
साधु के भेष में फल मंगवाया
सीता ने पार की लक्ष्मण रेखा
रावण उठा के उसको चल दिया लंका
राम लक्ष्मण आए वापस घर
उनकी समझ आ गया रावण का षड्यंत्र
दुख में वहाँ बोले राम
सीता को बचाना है हमारा काम
पुष्पक विमान से सीता गिराए पायल
रावण से युद्ध कर जटायु घायल
राम लक्ष्मण को मिले जटायु मार्ग पर
कहत सीता है लंका में
राम को मिले हनुमान

वानर सेना करें उनका सम्मान
विभीषण को मित्र माना
और सब चल दिए लंका
लंका के मार्ग में था सागर
इसको कैसे किया जाए पार
नल-नील का योगदान
श्री राम का सेतु करे काम
हनुमान फिर लंका जाई
लंका में आग लगाई
शुरू हुआ फिर युद्ध महान
राम की शौर्य का सब गाए गान
वानरों ने किया राक्षसों का संहार
राक्षसों ने भी किया प्रहार
युद्ध की वह रात थी काली
मेघनाथ ने नाग पाश चलाई
मूर्छित हुए लक्ष्मण रघुराई
हनुमत ने फिर गरुड़ बुलाई
गरुड़ ने साँपों को खाया
राम-लक्ष्मण ने जीवन वापस पाया
मेघनाथ करे माँ निकुंबला की पूजा
माता ने दिया उसे अस्त्र दूजा
एक बार चल जाए यह अस्त्र
इसे काट ना पाए दूजा शस्त्र
लक्ष्मण ने किया युद्ध महान
शक्ति चलाएँ क्रोधित मेघनाथ
भाई की अवस्था देख राम विलाप
क्यों ले गया तुम्हें वन अपने साथ ?

राज वैद्य सुषेन आए
लक्ष्मण को बस संजीवनी भाए
उड़े फिर हनुमान संजीवनी लेने
देनी थी लक्ष्मण को भोर से पहले
किंतु हनुमान दवा पहचान ना पाए
इसलिए पूरा पहाड़ ले आए
इतनी शक्ति थी संजीवनी में
प्राण वापस पाए लक्ष्मण ने
क्रोधित लक्ष्मण ने किया प्रहार
कर दिया इंद्रजीत का संहार
युद्ध भूमि में आया रावण
चलाए घातक बाण
राम ने लिया ब्रह्मास्त्र का नाम
रावण गिरा बोला जय श्री राम
सबके मन में थी एक ही आस
सीता लौटे राम के पास
फूलों से ढकी सुंदर पालकी
राम के पास लौटी जानकी
लोगों ने शुद्धता का प्रमाण माँगा
सीता ने दी अग्नि परीक्षा
अयोध्या पधारे फिर सियाराम
हनुमान ने किया राम कथा का गान
अयोध्या में उठी शंका की बात
सीता पवित्रता पर सबका साथ
रघुकुल की लाज का हुआ बवाल
सीता के मान पर लगे सवाल

राजधर्म निभाना आया भार
श्री राम को देना पड़ा धर्म का
अधिकार
रघुपति को मजबूर किया धर्म ने
सीता का त्याग हुआ भारी मन से
भगवान वाल्मीकि के आश्रम में शरण
हुआ लव-कुश का जन्म
अयोध्या गई लव-कुश की जोड़ी
सियाराम विरह बात समझी
अश्वमेध के घोड़े को रोके वीर
चुनौती दे रघुकुल को
शत्रुघ्न से हुआ वीरता का सामना
सम्मोहन अस्त्र ने किया रोका
वीर शत्रुघ्न गिरे रण में
नियति का खेल जान ना सके
लक्ष्मण से हुआ लव-कुश का सामना
धनुष से छोड़ बाणों का ताना-बाना
राम के आदेश का पालन था ध्येय
युद्ध में समाप्त हुआ लक्ष्मण का
खेल
भरत से हुई भिड़ंत
वीरता दिखा लव-कुश थे अनंत
युद्ध में लव कुश ने पाई विजय
भरत को मिली पराजय
राम तक पहुँची युद्ध की खबर

राम ने लिया चुनौती का सफ़र
सीता आई राम के समक्ष पुनः मिलन
वर्षों बाद देखे एक दूजे के नयन
परंतु अयोध्या नहीं माना फिर से
धरती में समा गई जनक दुलारी एक
पल में
लक्ष्मण ने मृत्यु श्राप पाया
राम के दिल में दर्द समाया
राम ने भी किया वियोग का अंत
सरयू में डूबे, दिया जीवन को विराम
रामायण का संदेश-सदा जीवित रहेगा
प्रेम और धर्म का पाठ सिखाएगा।
त्याग और कर्तव्य की महा गाथा
सियाराम की यश गाथा ।

ऊष्मा पोखरियाल 'सातवीं-जी'

16. सपने सलोने

यह जो मेरे सपने हैं,

सलोने से अपने हैं।

सतरंगी मैं पंख फैलाऊँ,

डिज़नी लैंड मैं झट-पट घूम आऊँ।

फिर नील गगन को करके पार,

सूरज से करु बातें चार।

धरती पर हो रहे हैं पेड़ कम,

क्या इसलिए आप हो रहे हो इतने गरम?

अब करता हूँ मैं पक्का वादा,

नहीं काटेंगे हम पेड़ ज़्यादा ।

जो अब हो गई है बट्टी हमारी,

नन्हे बच्चों से कर लो यारी।

जब हम बच्चे खेलें बाहर,

आँख-मिचौली तुम करना आकर ।

धूप छाँव में हंसते खेलें,

हम बच्चे प्यारे अलबेले।

हे ईश्वर, जो हमें दो पंख,

तो हम दिखलाए अनोखे रंग।

फलित दत्ता 'तीसरी-सी'

17. जीवन दायक पेड़

मैं एक पेड़ हूँ
मैं खड़ा हूँ धरती पर चुपचाप,
हर मौसम में रहता संतुष्ट आप।
धूप हो या हो तूफ़ान,
मैं देता सबको आराम।
पत्ते मेरे हरियाली लाते,
पंछी आकर गीत सुनाते।
छाया दूँ, फल भी दूँ,
फिर भी कभी कुछ ना माँगूँ।
काटो मत मुझे बार-बार,
मैं हूँ जीवन का आधार।
मुझसे ही ये जग हरा है,
मुझसे ही हर सपना सजा है।

कनिष्का 'आठवीं-डी'

18. प्रकृति का संदेश

नीला गगन कुछ कहता है,
चाँदनी में जल बहता है।
तारों की पलकें मुस्काएँ,
रातें चुपचाप गीत सुनाएँ।
पत्ते फुसफुसाते राज़,
हवा रचती मीठा साज़।
फूलों की हँसी, बूंदों की बात,
बादल गाए मधुर प्रभात।
नदी की लहरों का संवाद,
दिल के पास, बिना उफ़ान।
पेड़ों की गोदी में झूले,
बचपन के दिन लौटें फूले।
सूरज जब छिप-छिप जाए,
छाँव धीरे से पास बुलाए।
चिड़ियों की बोली में उजाला,
धरती कहे – "मैं तेरा सहारा।"
हर कण में है प्रेम की लहर,
जैसे ध्यान में बैठा हर पहर।
मत छेड़ो इनको, मत तोड़ो,
जीवन है ये – इनसे ना मुँह मोड़ो।
हरियाली में छिपा अमूल्य रत्न,
प्रकृति ही है सबसे सुंदर तन।
प्यार के बीज सभी बोएँ,
सूनी गलियाँ फिर ना रोएँ।
मन हो महके, आँगन गाए,
धरती फिर से स्वर्ग बन जाए।

19. वन और हरियाली

यह जीवन है अधूरा,

वनों और उनकी हरियाली के

बिना,

न काटो इन्हें।

कहाँ जाएँगे ये बेचारे जानवर,

न करो इन नदियों को गंदा,

कहाँ से पीयेंगे वो पानी अच्छा?

इन बेज़ुबां जानवरों ने क्या

बिगाड़ा है तुम्हारा,

तुम क्यों दे रहे हो इतनी बड़ी

सज़ा?

क्या यही प्रकृति है?

क्या यही करिश्मा है?

क्या यही हमारी मानवता है?

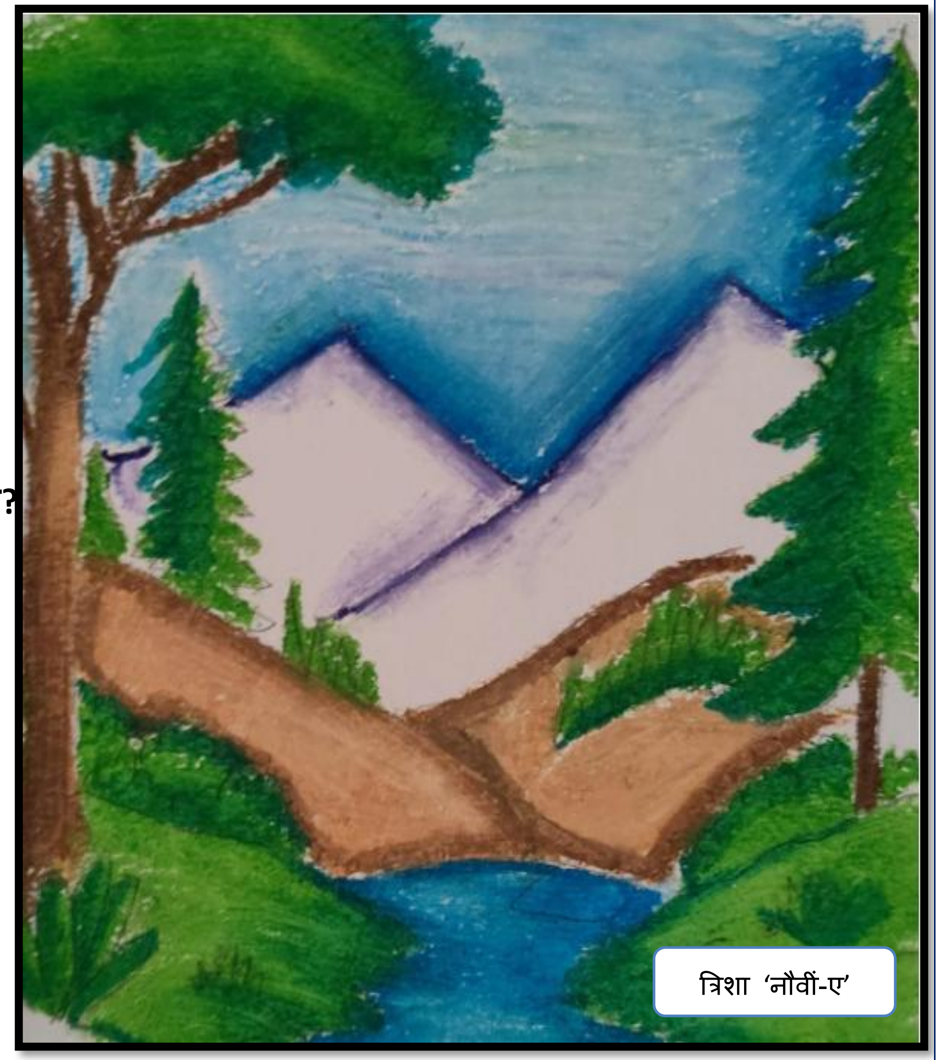

त्रिशा 'नौवीं-ए'

किरन 'सातवीं-जी'

20. मैं और मेरा शहर

मेरा शहर है दिल्ली,

जहाँ सपनों को भी मिलती है गली।

कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी,

यह जाती है छाई,

यह तो है भारत की परछाई।

इस धरती की बात ही न्यारी है,

जहाँ कि इमारतों में संवेदना बसी सारी है।

दिल्ली न केवल राजधानी,

बल्कि आत्मा है इस देश की सबसे पुरानी।

लाल किले की दीवारों से गूँजे इतिहास,

और इंडिया गेट पर चमकता उजास।

यहाँ बारिश भी गिरती है शायरी बनकर,

और धूप बिखरती है स्वर्णिम अवसर।

पूर्व हो या पश्चिम, दिल्ली सबसे गरिमामयी,

जहाँ हर दिल में बसी हो संस्कृति की परछाई।

इतिहास की चुप्पी, भविष्य की रवानी,

दिल्ली है भारत की बेमिसाल कहानी।

राव्या बत्रा 'सातवीं-जी'

21. जीवन का झरना

यह जीवन क्या है? – निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है,
सुख-दुख के दोनों तीरों से चल रहा, राह मनमानी है।
कब फूटा गिरि के अंतर से, किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बहकर आया, समतल में अपने को खींचे?
निर्झर में गति है यौवन है, वह आगे बढ़ता जाता है,
धुन एक सिर्फ़ है 'चलने की', अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता,
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।
लहरें उठती हैं गिरती हैं। नाविक तट पर पछताता है,
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।
निर्झर में गति ही जीवन है, रुक जाएगी यह गति जिस दिन,
उस दिन मर जाएगा मानव, जग-दुर्दिन की घड़ियाँ गिन-गिन।
निर्झर कहता है-बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर,
यौवन कहता है-बढ़े चलो, सोचो मत, होगा क्या चलकर।
चलना है- केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।
मर जाना है रुक जाना ही, निर्झर यह, झरकर कहता है।

नंदिका अरोड़ा 'सातवीं-ई'

22. नया हैदराबाद

नए हैदराबाद की गाथा,

प्रगति की राह,

जहाँ तकनीक और संस्कृति,

एक साथ आएँ,

चारमीनार की शान,

रामोजी की भव्यता,

नए हैदराबाद की पहचान,

जो हमें गर्व दिलाती है।

लेकिन इस प्रगति की राह में,

हरियाली खो गई है।

अस्वच्छ हवा और पानी की कमी ,

चुनौती बनी नई पीढ़ी के लिए।

पेड़ लगाएँ, प्रकृति की रक्षा करें,

नई पीढ़ी के लिए हरित भविष्य बनाएँगे।

नए हैदराबाद में

तकनीक और हरियाली का संगम

नई उड़ान जो हम आगे बढ़ाएँगे।

किरण मीना 'सातवीं-जी'

23. भारत की वीर बालिका

मेरा देश भारत महान, हम बेटियाँ इसकी शान,

हम समाज की हैं मान, मात-पिता का हैं सम्मान।

ऐसा अब क्या बचा है मुझसे, धरती अंतरिक्ष या आसमान।

ऐसा कोई काम नहीं जो, अब मैं नहीं कर सकती,

ये तो कुछ लोगों की सोच थी, जिसे हमने भुगती।

चंदन है इस देश की माटी, मैं इसका तिलक लगाऊँगी,

मैं भारत की वीर बालिका, दुश्मन को मार भगाऊँगी।

पैरों में मेरे जंजीर न बाँधो, मैं भी बंदूक उठाऊँगी,

मैं भारत की वीर बालिका, मैं भी सरहद पर जाऊँगी।

हौंसले मेरे सबसे बढ़कर कभी सर अपना न झुकाऊँगी,

मैं भारत की वीर बालिका, माटी भी लाल कर जाऊँगी।

न समझ कमजोर मुझको मैं बल अपना दिखलाऊँगी,

मैं भारत की वीर बालिका, हर बाधा पार कर जाऊँगी।

भारत माँ अब आज़ाद है , मगर इतिहास में कई

मुश्किलें हैं झेली,

मैं भारत की वीर बालिका, वतन-रक्षा के लिए

प्राण भी गवाऊँगी।

चंदन है इस देश की माटी, पलते हैं देशभक्त यहाँ,

मैं भारत की वीर बालिका, तिरंगा ऊँचा लहराऊँगी।

मेरा भारत, मेरा हिंद, मेरी हिंदी मेरी धरोहर है,

मैं भारत की वीर बालिका, जग में नाम कमाऊँगी।

पृषा 'दसवीं-एफ'

24. सूरज बनो

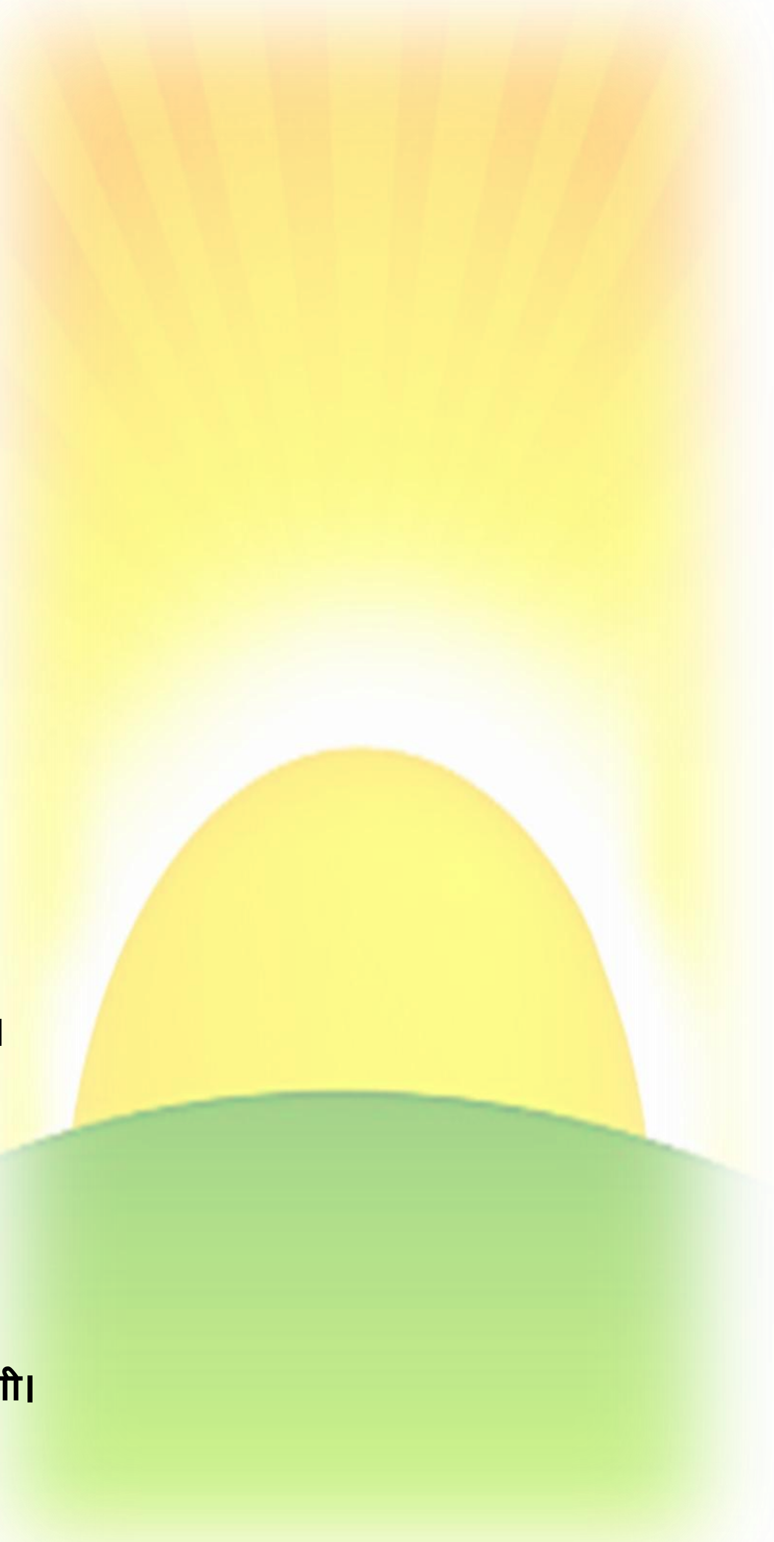

जब जीवन में अंधेरा घना हो जाए,

और कदम बढ़ाना मुश्किल लगने लगे।

अपने अंदर की ज्योति को जगाओ,

हर मुश्किल को हौसले से हराओ।

तारे ओझल हों, चाँद छुप जाए,

पर तुम्हारी ताकत कभी ना मुरझाए।

आँधियों से लड़ो, तूफ़ानों को झेलो,

सूरज बनो, हर बाधा को तोड़ो।

सपने छोटे हों, पर विश्वास बड़ा करो,

मेहनत से मंज़िल को करीब लाओ।

हर आँसू, हर निशान तुम्हारी पहचान,

बता रहे हैं कि तुम हो अपराजित प्राण।

डर को पीछे छोड़, उम्मीद से जियो,

हर कदम पर नई रोशनी लाओ।

तुम्हारी चमक दूर तक जाएगी,

हर दिल को प्रेरणा और साहस दे जाएगी।

वीर आदित्य सिंह ‘दसवीं-ए’

25. रोशनी का राज

रात का अंधेरा था,

और तभी एक पेड़ से हल्की सी रोशनी आई।

मैंने उसे देखा, और एक पल के लिए समझ में आया

पर्यावरण वैज्ञानिक सच कहते हैं,

प्रकृति सच में रहस्यमयी है।

हर रात कुछ खास छुपा होता है,

जो हमें आसानी से नहीं दिखता।

काश, मैंने उस रोशनी को पहले देखा होता,

काश, उस पल को पहले महसूस किया होता।

अनायशा सिंह 'दसवीं-सी'

26. पिंजरे का परिंदा

सलाखों के पीछे मेरा संसार,
किंतु खुले गगन से मुझे प्यार।
पिंजरे से मुक्त करो, कर दो मेरा उद्धार,
लौटा दो इन पंखों को उनका अधिकार।
मुक्त कर दो इस पिंजरे के परिंदे को,
स्वच्छंदता से खुली हवा में उड़ने दो।
पिंजरे का भोजन मुझे भाए नहीं,
भूखा रहना है बेहतर सही।
अगर मैं मुक्त हो पाऊँ कभी,
स्वतंत्रता से तृप्त हो जाऊँ तभी।
मुक्त कर दो इस पिंजरे के परिंदे को,
स्वच्छंदता से खुली हवा में उड़ने दो।
यह कैद मेरे दिल को थामे,
हर चाह पर रोक लगाए।
जंगल की महक याद दिलाए,
मुक्ति की राह मुझे बुलाए।
मुक्त कर दो इस पिंजरे के परिंदे को,
स्वच्छंदता से खुली हवा में उड़ने दो।
सलाखों में सिमटी मेरी हर पुकार,
आज़ादी के बिना जीवन है बेकार।
मुक्त कर दो इस पिंजरे के परिंदे को,
स्वच्छंदता से खुली हवा में जीने दो।

शनाया आठवीं 'ई'

ऊष्मा पोखरियाल 'सातवीं-जी'

27.मेरे जगन्नाथ

मेरा मुझ में कुछ नहीं,
मेरा जगत में कुछ नहीं;
सिवाए जगन्नाथ के,
मैं हूँ तेरा !
हे नाथ मैंने ढूँढा पूरा जग,
किन्तु पाया न कभी प्रेम।
प्रेम की नगरी, प्रेम का धाम;
मेरो श्री वृन्दावन धाम!
कबहु मिलेगो प्रेम को धाम,
तेरो धाम!
बीता जावे मेरो जीवन,
सुख तेरे चरणन में ही पाऊँ!
तू ढीठ, तो मैं घोर ढीठ नाथ!
तू परमेश्वर, मैं दास नाथ!
तू बंसी का सुर है हे नाथ,
तेरे बिन कछु न भाए नाथ !
मेरा मुझ में कुछ नहीं,
मेरा जगत में कुछ नहीं ।
मेरा है तो बस राधा नाम!
श्री गिरिधर गोपाल, मैं हूँ बस तेरा नाथ !

वेदांतिका 'दसवीं-डी'

कीर्ति वैध 'नौवीं-बी'

28. वीरों की गाथाएँ

आओ तुम्हें भारत वर्ष का इतिहास दिखलाता हूँ।

जिस माटी पर जन्म लिया उस पर आज शीश झुकता हूँ।

जिन्होंने अपने रक्त से धरती का मान बढ़ाया है,

उन वीरों की अमर गाथा आज तुम्हें सुनाता हूँ।

प्रिशा 'दसवीं डी'

मुगलों का आतंक देखकर दक्कन में हुंकार मची।

रायगढ़ की गद्दी पर स्वराज की जय-कार उठी।

बाघ नख लिए शत्रु को मौत की नींद सुलाकर वो,

मराठों के छत्रपति, शिवाजी की तो बस ललकार उठी थी।

चार बास चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमाण।

ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान।।

चंद्रबरदाई के मुख से जब निकला था ये गान,

उठा बाण, लगा निशान, गरजा पृथ्वी चौहान।

पंचदश बालिश्त जितना अलबेला मस्ताना था।

नील रंग का, वायु वेग से तेज़ दौड़ने वाला था।
हल्दी घाटी जैसे युद्ध में भी जो अश्व अपने जीवन की,
न सोचे तो सोचो कि उस भूमि की कैसी शान होगी।
जब बात चली है चेतक की, तो बात चलेगी उस वीर की
जिसने घास की रोटी खा ली, पर न बेच सका आज़ादी।
जब जब मुगलों ने मेवाड़ को मुट्ठी में लेना चाहा था,
तब महाराणा प्रताप आया था, हल्दी घाटी रचा डाला था।
वीरों की इस धरती पर वीरांगनाएँ भी निराली थीं।
पीठ पर पुत्र को लादकर युद्ध करने वाली थी।
मृत्यु को वह प्राप्त हुई पर अमर रही कहानी,
खूब लड़ी मर्दानी वह थी झाँसी वाली रानी।
मत भूलो पद्मावती को, उसका तेज निराला था।
स्वयं ज्वाला में कूद कर एक नया इतिहास रच डाला था।
जायसी ने यह भी बताया कि रतन सिंह शूरवीर थे,
नारी के सम्मान हेतु हुए वे शहीद थे।
अमर रहेंगी यह गाथाएँ जब तक हिंद स्वदेश है।
अमर रहेंगी यह गाथाएँ जब तक मानवता शेष है।
जाता तो है स्वतंत्रता का श्रेय कई अनेक को,
नमन करो इस धरती माँ को, क्योंकि हम सब एक हैं।

श्रेय बंसल 'नौवीं-बी'

29. अपनी रेल

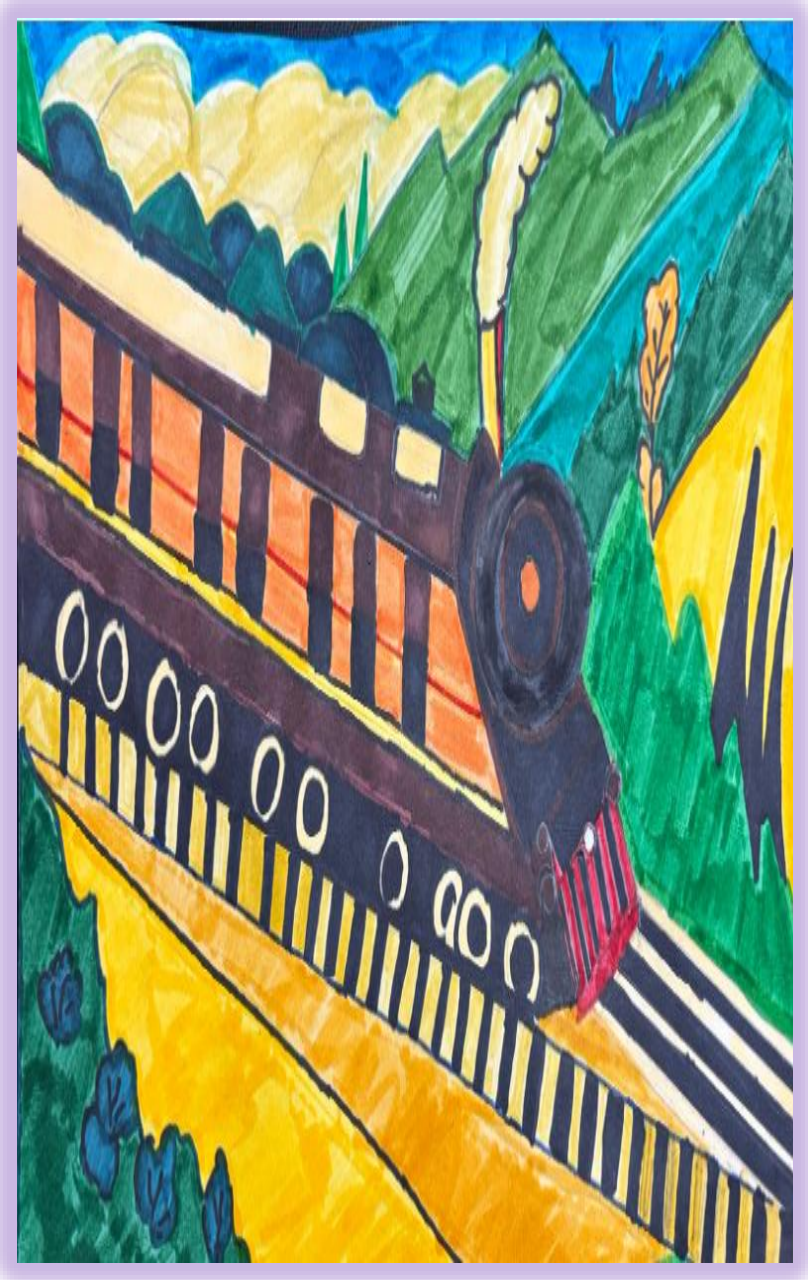

उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम,
आती-जाती अपनी रेल ।
गाँव, नगर और बस्ती में,
हरदम दौड़ लगाती रेल ।
सबको यह अपना माने,
इसको कोई भार नहीं ।
छोटे और बड़े का इसमें
होता कभी विचार नहीं ।
नदियाँ घाटी या मैदान,
हरे खेत या रेगिस्तान ।
सबकी मिलती गोद इसे
सबका पाती यह सम्मान ।
सफ़र प्रेम से कट जाता,
दु:ख मिल-जुल कर बँट जाता।
मेल-जोल है बढ़ जाता
वैर-भाव सब घट जाता ।

अनघ कौल 'चौथी सी'

30. मेरे पापा

मैं हूँ रिहांश वाधवा, कक्षा चौथी 'ई' का तारा,

पापा मेरे सबसे प्यारे, उनसे ही मेरा सहारा।

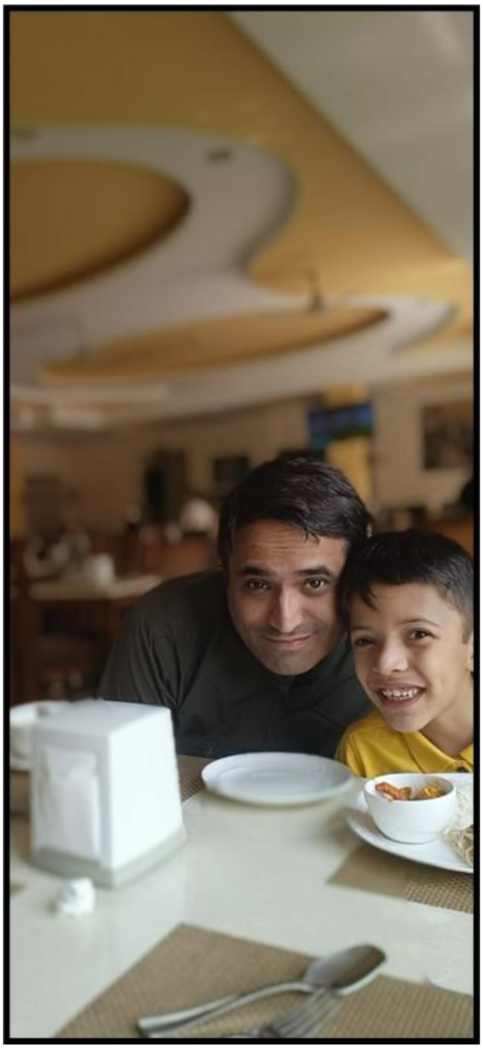

सुबह-सुबह उठाते हैं, कहते हैं-"बेटा चलो हो जाओ तैयार",

स्कूल बैग रखवाते हैं, करते हैं मुझसे बहुत प्यार।

जब मैं थक जाऊँ पढ़ाई में,

पापा खेलें मेरे साथ लड़ाई में!

चॉकलेट लाएँ, कहानियाँ सुनाएँ ,

हर दिन को वो खास बनाएँ।

मैं जब गिरूँ, वो थाम लेते हैं,

मेरे हर डर को नाम देते हैं।

पापा मेरे सुपर हीरो हैं सच्चे,

उनके बिना क्या है बच्चे ?

रिहांश वाधवा 'चौथी-ई'

31. पर्यावरण का संदेश

हरियाली है जीवन का नाम,
बिना पेड़-पौधों के सब है सुनसान।
जल, वायु, मिट्टी को बचाओ,
धरती माँ को सुखी बनाओ।

नदी हो स्वच्छ, हवा हो साफ़,
यही है प्रकृति का असली ताज।
चलो मिलकर प्रण ये लें,
हर दिन एक पौधा हम दें।

हितांश गोस्वामी 'पाँचवीं-ए'

32. एक-एक

एक-एक यदि पेड़ लगाओ,
तो तुम बाग लगा दोगे।
एक-एक यदि ईंट जोड़ो,

तो तुम महल बना लोगे।
एक-एक यदि पैसा जोड़ो,
तो तुम बन जाओगे धनवान।

एक-एक यदि अक्षर पढ़ लो,
तो तुम बन जाओगे विद्वान।

प्रियांश 'तीसरी-बी'

33. प्रकृति से खिलवाड़

खिलवाड़ प्रकृति से करने को,

नहीं कोई अब डरने वाला अब।

स्वार्थ सिद्धि करने की खातिर,

सभी इसे ठगने वाले।

मौन खड़ी सब सह जाती है,

कभी नहीं कुछ कह पाती है,

अश्रुधारा-सी बह जाती है।

छीन आश्रय असंख्य जीवों का,

स्वप्न सजाते ऊँचे महलों का,

ताक पर रख हर नियम को,

अपना हित सब पा जाते।

अगाता सांगवान 'नौवीं-डी'

34.प्रकाश

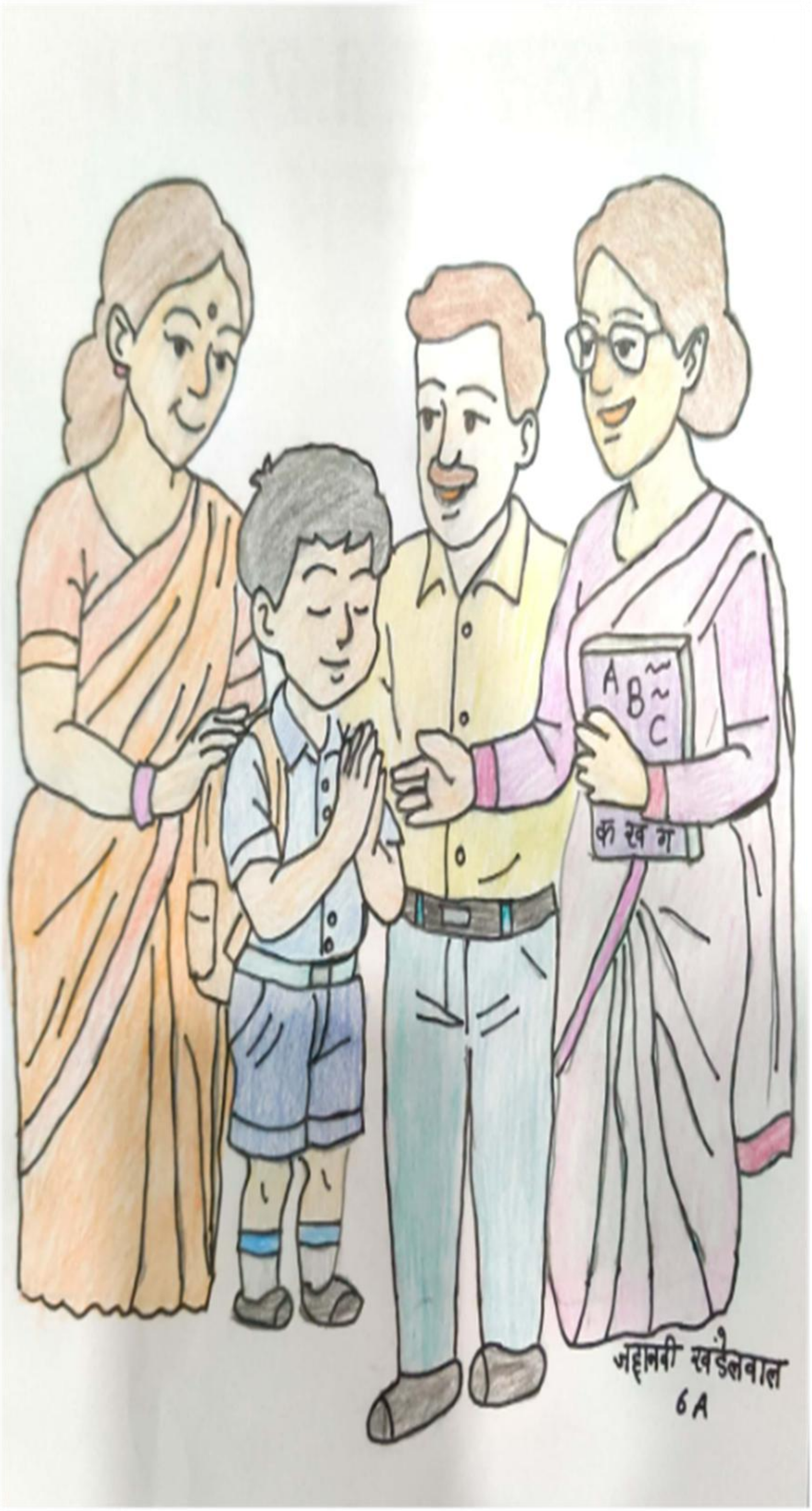

पहली उँगली जिनकी पकड़ी,

जिनसे पहली शिक्षा पाई,

मात-पिता वो थे मेरे,

जिसने मुझे पहली राह दिखाई,

पर क्या इतने में ही,

मेरा जीवन पूर्ण हुआ?

नहीं..अभी एक प्रकाश का,

जीवन में आना बाकी था,

जब विद्यालय में पाँव धरा,

तब जाना क्या छूटा था।

एक खान थी शिक्षा की,

जो बिन शिक्षक न मिलनी थी।

सभी गुरुदेवों ने,

मुझको आगे का ज्ञान दिया,

मात-पिता के सम बनकर,

जीवन का कल्याण किया।

अभी ये स्नेह बना है मुझपर,

आप सभी से जुड़ी मेरी कहानी है।

माही 'छठी-डी'

35. गर्मी आई फल ले आई

गर्मी आई, धूप है भायी,
फल मंडी में रौनक छायी।
पका आम लाया मिठास,
सबके मन में जागी प्यास।
मीठी लीची आई रानी,
गालों जैसे लाल कहानी।
रस की बूँदें टप-टप जाएँ,
बच्चे खुश हो गाना गाएँ।
तरबूज़ बोला - मैं हूँ ठंडा,
गर्मी मुझसे भागे झट से कर दूँ ठंडा।
खरबूजा बोला - मैं भी साथ,
ठंडक दूँ मैं हर दिन हर रात।
केला बोला - मैं हर दिन आऊँ,
बिना मौसम के सबको भाऊँ।
खाओ मुझको हर एक मौसम,

स्वाद में हूँ सबसे ज़्यादा पसंद।
फल हैं सारे प्यारे-प्यारे,
गर्मी में बनें हमारे सहारे।
सेहत दें, मुस्कान बढ़ाएँ,
चलो फलों से दोस्ती बढ़ाएँ!
फलों में छुपा है पोषण का राज,
खाओ रोज़, बनो मज़बूत और तेज़ दिमाग।
विटामिन, फाइबर, ऊर्जा लाते,
बीमारियों को दूर भगाते।
सेब, केला, आम हों ख़ास,
हर फल में होता है कुछ ख़ास।
तो बच्चो सुनो ये प्यारी बात,
फल खाओ, रहो स्वस्थ दिन-रात!

सरिता शर्मा
हिंदी विभाग

36. जादू की छड़ी

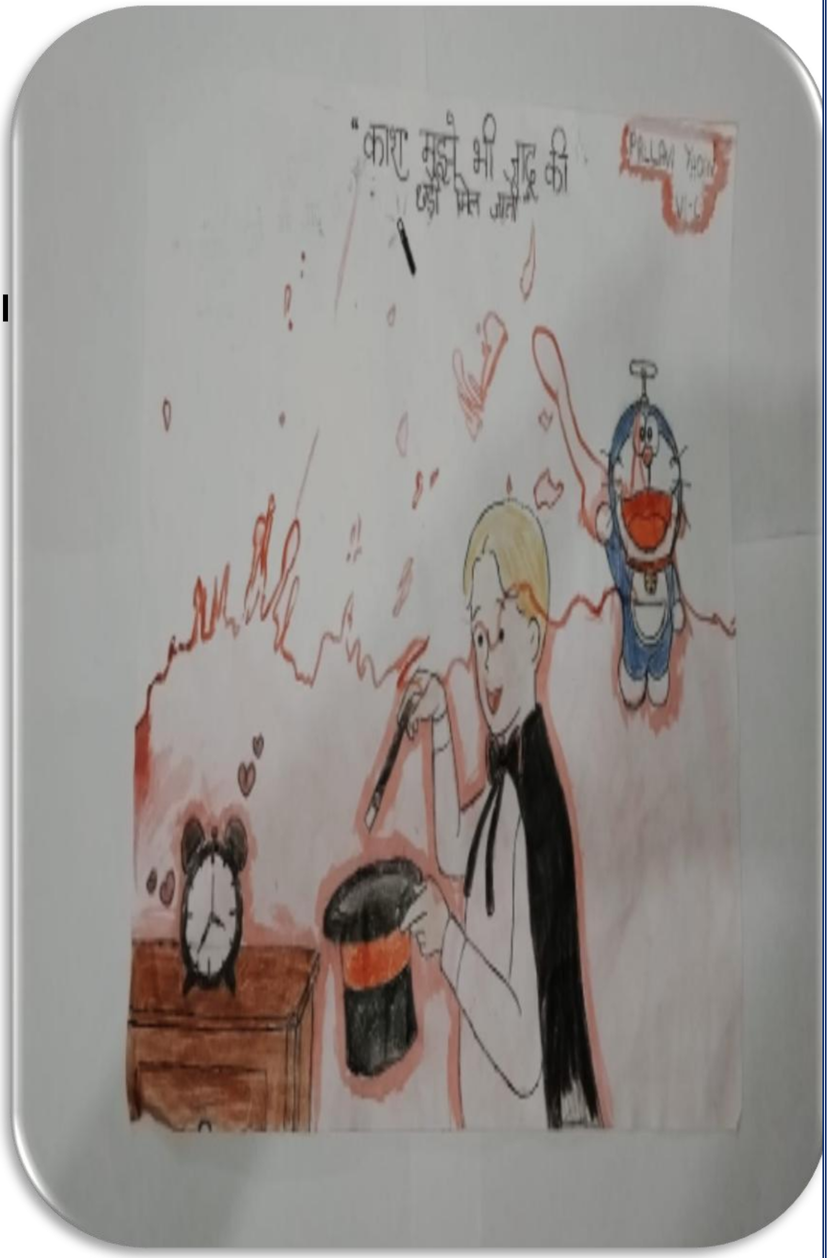

काश मुझे जादू की छड़ी मिल जाती

काश मुझे जादू की छड़ी मिल जाती,
हर सुबह खुशियों की घड़ी मिल जाती।
घुमाता मैं छड़ी को हवा में हँसकर,
डोरेमॉन आ जाता मुझसे मिलकर।

उससे मैं गजेट्स अनोखे मँगवाता,
सपनों की दुनिया मैं खुद ही बनाता।
बागों में टॉफी के पेड़ लगाता,
हर जूस झरने से खुद ही बह जाता।

जब मम्मी डाँटें, मैं छुप जाता,
फिर मम्मी के गले लग रो देता।
हर ग़म को छड़ी से दूर भगाता,
हर दिल में प्यार का दीप जलाता।

काश मुझे जादू की छड़ी मिल जाती...

सरिता शर्मा 'पीजीटी-हिंदी'

37. नैतिक मूल्य और आज का युग

हर सुबह की पहली किरण में,

सच व ईमानदारी की झलक हो।

खुले दिल से हम जो चलें,

उम्मीदों की राह में चमक हो।

आज के तेज़ी से बदलते दौर में,

जहाँ है हर तरफ नया और अनजान,

हमारे नैतिक मूल्यों का साथ रहे,

बन जाए ये जीवन का ज्ञान।

सच्चाई, दया और सामंजस्य से,

रोशन हो हर किसी की राह,

इस युग में जब हो अँधेरे अधिक,

इन उज्ज्वल गुणों से मिले राहत व भाईचारे की परछाई।

आओ हम सब मिलकर सजाएँ,

मन में उमंग, दिल में विश्वास जगाएँ,

नैतिक मूल्यों की इस अमूल्य धरोहर को,

आज और कल के लिए इसे संजोएँ।

जन्नत 'छठी-ई'

38. ऊँचा आसमान

ये ऊँचा आसमान ... हाँ,

ये है वो रहनुमा ढक कर है खड़ा,

देखो ये सारा जहान।

रंग भरता नदियों में,

खग सभी आँचल में हैं।

शिला-सा ये कभी,

बिखरता बूँदों में है।

रखवाला पिता-सा है,

नर्म ये माँ-सा है।

ये बाँहें खोले बुलाता,

हाँ! दिलरुबा-सा है !

कहता है कि आ उड़ चलें,

विस्तृत नभ बुलाता-सा है!

समेटें सारा जहान,

नभ ये मुस्कुराता-सा है !!

प्राधिका राणा 'बारहवीं एच'

39. सिसकती उम्मीद

मुझसे मेरी बेटी अक्सर ये पूछती है,
नम आँखों के बीच माँ, तू किसे टटोलती है।
अब मैं उसे क्या समझाऊँ, कैसा ये संसार है,
भावनाओं का यहाँ लगता बाज़ार है,
भूख और बेबसी का होता यहाँ व्यापार है,
यहाँ हर रिश्ते के नाम पर, होता व्यभिचार है।
कभी दुल्हन के लिबास में डोली में भेजी जाती है,
कभी बेटी बना पलकों पर बिठाई जाती है,
कभी देवी बना मंदिरों में पूजी जाती है,
कभी कोख में ही बिना कारण मारी जाती है!
'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता',
के देश में क्यों 'बेटी बचाओ' के नारों की ज़रूरत पड़ती है?
माना सहनशक्ति और ममता की मूरत है वो,
सबको देने वाली अपने लिए चाहती कुछ नहीं है वो।
समझो ये कि हमारा जीवन आधार है वो,
जानो कि आज़ाद होने की अधिकारी है वो।

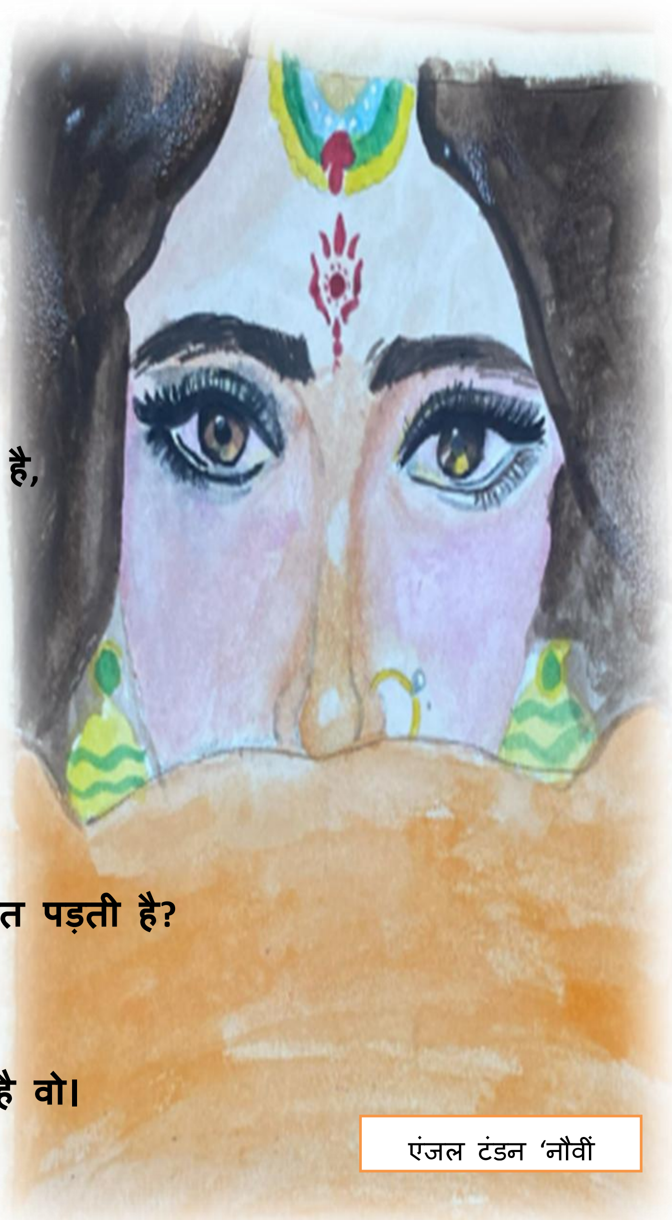

एंजल टंडन 'नौवीं

दीपिका यादव 'बारहवीं एच'

40. ऋतुराज मधुमास

गुँजे शाख़ों से गिरने से पहले,

सूर्य रश्मियाँ, बिछने से पहले,

ऋतुराज मधुमास आने से पहले,

आ जाना प्रिये, मेरे जाने से पहले।

प्रकाश पुंज सिमटने से पहले,

शीत की धुंध बिखरने से पहले,

स्वप्न नगरी, मिटने से पहले,

आ, जाना प्रिये, मेरे जाने से पहले।

ग्रीष्म का ग़म बहने से पहले,

मानसून के मेघ बरसने से पहले,

कविता के छंद बिछड़ने से पहले,

आ, जाना प्रिय, मेरे जाने से पहले ।

सरिता शर्मा

हिंदी विभाग

41. मुस्कुराएँ

मुस्कुराएँ, अगर आप हार गए,

कोई और उस जीत के प्राप्य था।

मुस्कुराएँ, अगर आपकी इच्छा पूर्ण न हो,

वह इच्छा किसी दूसरे की थी।

मुस्कुराएँ, अगर आप दुःखी हैं,

वह खुशी किसी दूसरे के वास्ते थी।

मुस्कुराएँ, मुस्कुराएँ, सिर्फ़ मुस्कुराएँ।

मुस्कुराते हुए रोते हैं, रोते हुए मुस्कुराइए।

मुस्कुराते हुए हर पल, मुस्कराते हुए जीना सीखिए।

द्वैपायन डे 'दसवीं-डी'

42. पंचतत्व

पाँच तत्वों में छुपा है ज्ञान,
हर अक्षर में है भगवान।
भूमि से शुरू हुई कहानी,
नीर से खत्म हुई ये पानी।

भूमि देती हमें आधार,
अग्नि करती दूर अंधकार।
गगन प्रकट है पूरे संसार,
इन तीनों को करते हम प्यार।

वायु हवा के रूप में,
हर जगह बहती है।
गगन में सूरज की गर्मी,
और चंद्रमा की ठंडक मिलती है।

भगवान के नाम से,
बनते हैं ये सारे तत्त्व।
जीवन को देते हैं रंग और रूप,
इनसे ही जुड़ा है हर एक स्वरूप।

सूर्यांशी 'आठवीं डी'

विवान जयरथ 'आठवीं-डी'

43. मन तू क्या चाहता है ?

मन तू क्या चाहता है?
मन तू क्या चाहता है, बता तो सही,
शांत लहरों में क्यों उठती है हलचल कहीं?
सपनों के मेले में, तू भटके हर पल,
कभी चाँद की चाह, कभी मिट्टी का संबल।
तू खोजे सुकून, पर खुद ही बेचैन है,
भीड़ में अकेला, तन्हाई में न चैन है।
कभी भूत की गली तो कभी भविष्य की राह,
वर्तमान से भागे, ये तेरी कैसी है चाह?
मन तू क्यों रुकता नहीं?
हर चाह के पीछे झुकता कहीं।
कभी प्रेम का प्यासा, कभी वैराग का ख्याल,
कभी राजा बने, तो कभी फकीरों-सा व्यवहार।
तू चाहता क्या है? बस थोड़ा ठहर,
खुशियाँ हैं यहीं, ना ढूँढ़ उन्हें चारों पहर।
स्वीकार कर जो है.... वही सत्य है,
जो मिला है जीवन में, वही पर्याप्त है।
मन, तू खुद से मिल, खुद को जान,
खुद को ही समझ, खुद को पहचान।
क्योंकि सच्चा सुख तो बस भीतर ही पलता है।

उपासना गौतम ‘हिंदी विभाग’

44. आसमान

माँ! आसमान बहुत ऊँचा है।

कोई न इसे उछलकर छूता है।

जो प्रयास करता है,

वो मुँह के बल गिरता है,

माँ आसमान बहुत ऊँचा है।

लाल मेरे मेरी बात सुन,

अपने मन में लगा ले एक धुन,

जो मेहनत बहुत करता है,

वही आसमान को छूता है,

जनसाधारण में न यह बूता है,

कोई बिरला ही आसमान छूता है।

मेरे लाल तू भी आसमान छू पाएगा,

अगर मेहनत के गीत तू गाएगा,

आसमान स्वयं ही झुक जाएगा,

और मेरा लाल आसमान छू पाएगा।

सीमा गौतम 'हिंदी विभाग'

45. अच्छा, चलता हूँ।

छिप रहा हूँ अब,
कुछ थक-सा गया हूँ।
मिलता हूँ दोबारा
तुम्हारी सुबह से पहले।
वैसे भी जनता हूँ मैं,
कोई टकटकी लगाए बैठा है,
इस पल के इंतज़ार में।
वो चित्रकार, अपना कैनवस
थामे,
कर रहा है इंतज़ार,
मेरी रंग-बिरंगी किरणों का।
कब मैं ढलने लगूँ,
और मेरी लालिमा को,
वो अपने कैनवस पर उकेर
डाले।
देखो वो कवि!
अपनी कलम एक ओर,
अपने मुँह में दबाए डूबा है,
खयालों में।
चकोर बेकरार है,
अपने प्रियतम चंद्र की इक
छटा पाने को।
वो पंछी देखो तो!
रुकते ही नहीं है,
निरंतर बढ़ते चले जा रहे हैं,

क्षितिज की ओर,
शायद उन्हें भी आराम मिल
जाए।
मेरे जाने से उन्हें भी,
नींद का पैगाम मिल जाए।
वादियों में टहलता वो राहगीर,
अपना कैमरा लिए बैठा है,
नदी किनारे,
मेरी ढलती खुबसूरती की,
एक झलक पाने को।
पहाड़ों का चोला बदलने को है,
अंबर भी चाहता है,
तारों की चादर में लिपटना।
तो चलो, कुछ सबको सुख
देता हूँ,
कुछ अपनी नींद लेता हूँ।
अच्छा, चलता हूँ।

*ऋतु डबास 'हिंदी
विभाग'*

कथा सागर

46. कागज़ की नाव

अनाया अपनी गर्मी की छुट्टियों में दादी के घर, गाँव गई। गाँव के बीचों-बीच एक शांत नदी बहती थी। वहाँ बच्चों के खेलने का बड़ा मैदान था। एक दिन गाँव में बच्चों के लिए कागज़ की नाव की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता के नियम बताए गए -

हर बच्चा अपनी नाव बना कर लाएगा।

जिसकी नाव सबसे दूर तक जाएगी, वही विजेता होगा।

अनाया ने सोचा, "अगर मेरी नाव बिना डूबे सबसे दूर तक जाएगी, तो मेरी जीत होगी।"

अगले दिन सभी बच्चे अपनी-अपनी नाव तैयार करके लाए। अनाया ने भी बहुत मज़बूत रंग-बिरंगी नाव बनाई।

"तीन........ दो........ एक... प्रतियोगिता शुरू करो।"

दादी ने घोषणा की। सभी बच्चों ने अपनी-अपनी नाव नदी में छोड़ी। अनाया की नाव धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। तभी नदी में एक तेज़ धार आई और सभी की नाव डगमगाने लगी। देखते ही देखते अन्य सभी बच्चों की नाव डूबने लगी। अनाया ने हार नहीं मानी। उसने एक लंबी लकड़ी की मदद से नाव को सीधा किया और सही दिशा में ले गई। जल्दी ही अनाया की नाव तैरने लगी और आगे निकल गई।

सभी बच्चे तालियाँ बजाने लगे और दादी भी हर्षित हो गई।

तभी अनाया के प्रतियोगिता जीतने की घोषणा हुई।

सीख : साहस और धैर्य से हम किसी भी चुनौती को पार कर सकते हैं।

क्षीरजा बसंत 'छठी-ई'

47. लालची सर्प

बहुत वर्ष पूर्व जंगल की गहराइयों में एक सर्प रहता था। वह आस-पास के पेड़ों पर चढ़कर चिड़ियों के अंडे खा जाता था। सभी चिड़ियाँ उससे परेशान थी, उन्होंने एक बार लोमड़ी की मदद लेनी चाही। वे लोमड़ी के घर के समक्ष पहुँची। चतुर लोमड़ी ने उन्हें एक उपाय बताया। अगले दिन चिड़ियों ने वैसा ही किया जैसा लोमड़ी ने कहा था। दो चिड़ियाँ चीं-चीं का अभिनय करते हुए सर्प के सामने कहा कि “पास के नगर रामपुर के राजा हरीशचंद्र ने हज़ार चिड़ियों के लिए घर का निर्माण किया है”। यह बात सुन सर्प ने सोचा “यहाँ हर रोज़ एक-दो अंडे खाने से अच्छा हर रोज़ राजा द्वारा निर्मित चिड़ियाघर में भर पेट भोजन कर सकूँगा” । यह सोचकर वह अगली रात वहाँ गया, सर्प को देखकर राजा के सैनिक सावधान हो गए और उसे मारने उसके पीछे भागे । वह सर्प को पकड़ने में सफल हुए और उन्होंने उसे मार दिया । यह सारी घटना चिड़ियाँ देख रहीं थी और वह अति प्रसन्न हुई । कुछ समय बाद लोमड़ी भी वहाँ आ गई - उसने कहा “लालच बुरी बला है” तभी सारी चिड़ियों ने उसकी हाँ में हाँ मिलाई ।

आद्या शर्मा ‘नौवीं-बी’

48. एक पन्ने की उड़ान

कक्षा-6 में पढ़ने वाली अनुष्का को लिखने का बहुत शौक था। वह हर दिन अपनी डायरी में कुछ न कुछ लिखती। कभी कविता, कभी छोटी-सी कहानी, कभी अपनी किसी यात्रा का अनुभव।

एक दिन स्कूल में अनाउंसमेंट हुई - 'किशोर दर्पण' हिंदी की वार्षिक पत्रिका के लिए रचनाएँ आमंत्रित की जा रही हैं। सभी छात्र-छात्राओं से कहा गया कि वे अपनी खुद की कहानी, कविता या यात्रा-वृत्तांत भेजें, साथ में नाम और कक्षा भी लिखें।

अनुष्का की आँखों में चमक आ गई। उसने सोचा, "ये तो मेरे लिए बिल्कुल सही मौका है!" उसी शाम उसने अपनी डायरी में लिखी एक कहानी को कंप्यूटर पर टाइप किया। कहानी थी - "पेड़ की चिट्ठी" जिसमें एक पुराने पेड़ ने बच्चों से पर्यावरण बचाने की अपील की थी।

उसने फाइल को अच्छे से सेव किया, नाम और कक्षा जोड़ी, और दिए गए नंबर पर भेज दी।

कुछ हफ्तों बाद जब पत्रिका छपी, तो अनुष्का की कहानी उसमें सबसे पहले पृष्ठ पर थी। पूरा स्कूल उसकी तारीफ़ कर रहा था। अनुष्का को तब समझ में आया कि एक छोटी-सी रचना भी बहुत बड़ा असर डाल सकती है, बस हमें उसे उड़ान देने की हिम्मत करनी होती है।

सीख: अगर आपके मन में कुछ लिखने का ख्वाब है, तो उसे कागज़ पर उतारिए और मौका मिलते ही दुनिया को दिखाइए।

आरव सिंह परिहार 'सातवीं-ई'

49. निडर सैनिक

मोहन नाम का एक लड़का था। वह बहुत मेहनती और होशियार था। वह 19 वर्ष की आयु में वायु सेना में भर्ती हो गया था। वहाँ उसने हवाई जहाज़ चलाना सीखा साथ में अलग-अलग प्रशिक्षण लिए जैसे-हवाई जहाज़ चलाते वक्त शत्रु से कैसे बचना है और अगर किसी आपात स्थिति में फंस जाए तो उससे कैसे बचना है आदि। एक दिन सारे दोस्तों ने रविवार को रंग-मंडप जाने की योजना बनाई। वे सब रविवार को रंग-मंडप पहुँच गए। वहाँ पर जाकर अलग-अलग करतब करके दिखा रहे थे। मोहन बहुत आनंदित था तभी उसने तम्बू में कहीं दूर आग देखी उसे लगा कि अब आग का करतब होने वाला है परंतु धीरे-धीरे तम्बू में आग लग गई। वह सारे दोस्त तम्बू से बाहर निकल गए परंतु उस तंबू में स्कूल के बच्चे फंस गए थे। आग लगने की वजह से भगदड़ मच गई और रंगमंच के सभी जानवर जैसे-घोड़े, ऊँट, हाथी आदि भी बेकाबू होकर भीड़ को कुचलते हुए इधर-उधर भागने लगे। इन सबके बीच स्कूल के बच्चे बुरी तरह फंस गए और बहुत सारे आग की लपटों में जल गए।

मोहन जो पहले ही वहाँ से निकल कर बाहर खड़ा था यह दृश्य देखकर उसने हिम्मत नहीं हारी और वह स्कूल के बच्चों को भीड़ से खींचकर बाहर की ओर निकालने लगा। इस तरह उसने 15-20 बच्चों की जान बचाई। जिसमें से 3-4 बच्चे मोहन से लिपटकर रोने लगे और बोले, “भइया आप ही हमें हमारे घर छोड़ कर आओ। हम किसी ओर के साथ नहीं जाएँगे।” बच्चे बहुत घबराए हुए थे इसलिए मोहन को लगा कि मुझे ही इन्हें घर छोड़ कर आना चाहिए। बच्चों को सही सलामत देखकर उनके माता-पिता बहुत खुश हुए और मोहन को बहुत धन्यवाद दिया। मोहन के साहस के बारे में जब उसके अफसरों को पता चला तो उन्होंने उसे सम्मानित किया।

संदेश - विपदा में हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए।

लावण्या घंघस ‘पाँचवीं-एफ़’

50. ज़िम्मेदारी

सूरज की किरणों के उगते ही दिन की शुरुआत होती है। लेकिन कभी-कभी अनजाने में हम प्रकृति के अनमोल संसाधनों को बर्बाद कर देते हैं। हम ऊर्जा बर्बाद करते हैं। मैंने अपने स्कूल में बिजली और पानी के उचित उपयोग के बारे में यह लापरवाही देखी। इस स्थिति ने मेरे मन में एक नए विचार के बीज बोए।

रवि और नीना, जो हमेशा अपने स्कूल में नई चीज़ें देखने और सीखने के लिए उत्सुक रहते हैं, उन दोनों ने देखा कि खाली कक्षाओं में लाइटें जली रहने और अनावश्यक उपकरण चालू रहने के कारण बिजली की भारी बर्बादी हो रही है। नीना ने जागरूक होकर कहा,

"रवि, देखो, यह कक्षा खाली है, फिर भी लाइट जल रही है। हमें कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे हम ऊर्जा बचा सकें।" रवि ने सहमति में सिर हिलाया और दोनों ने मिलकर काम करने और एक योजना बनाने का फैसला किया।

अगले दिन, अपने दोस्तों के साथ अपने विचार साझा करते हुए, उन्होंने एक ऊर्जा-बचत क्लब बनाया। उन्होंने अपने सहपाठियों को भी इस क्लब में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। पहला कदम हर कमरे का निरीक्षण करना और यह पता लगाना था कि बिजली कहाँ बर्बाद हो रही है। रवि ने कहा, "अगर हम समय-समय पर अनावश्यक बिजली के उपकरणों को बंद कर दें तो स्कूल का बिजली खर्च भी बचेगा और प्रकृति का साथ भी बना रहेगा। अगले दिन, उनके शिक्षक जी ने इस विषय पर एक छोटे से विद्यालय को ऊर्जा के उपयोग के सही तरीके से आयोजित करने, सौर ऊर्जा के महत्व और बिजली के प्रभाव के बारे में बताया। नीना ने उत्साहपूर्वक पूछा, "सर क्या हम बच्चे भी इतनी ऊर्जा बचत के उपाय अपना सकते हैं?" शिक्षक जी ने कहा, "बिल्कुल, छोटे-छोटे प्रयास हमें उन्नति की ओर ले जाएँगे।"

'एनर्जी सेव क्लब' के समूह ने सामूहिक अभियान चलाकर अपने नियम भी बनाए - जैसे कक्षाओं के क्षेत्र, लाइट बंद करना, सौर मंडलों के बारे में जानकारी देना और अपने घर में भी सलाह देना। कुछ दिनों में स्कूल प्रशासन ने बच्चों के इस प्रयास को देखा और सुधार की सिफ़ारिशों को अपनाते हुए पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सकारात्मक कदम उठाया।

इस बदलाव से ऊर्जा की बचत के साथ बच्चों में ज़िम्मेदारी बढ़ने का भी अनुभव हुआ। रवि ने कहा कि हमारा छोटा-सा प्रयास अगर मिल जाए तो दुनिया बदल सकती है।

ऊर्जा बचाओ क्लब की सफलता ने स्कूल में नई सोच की शुरुआत की। इससे संदेश भी मिला - 'प्रकृति व ऊर्जा का संरक्षण ही हमारा स्वास्थ्य और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित कर सकता है।' इस प्रकार यह कदम हमें प्रेरणा देता है कि हम हिम्मत और साहस से बदलाव ला सकते हैं।

जरूद सोफ़ी 'छठी-ई'

51.ताश के पत्ते

जुनैद 'नौवीं बी'

"अब क्या ही करें? जुए की लत से तो बड़े-बड़े व्यापारी नहीं बच पाए, तो तुम तो फिर भी एक नौकरी करते हो।" यह शब्द मेरे पिता के मुख से तब सुनने को मिले थे जब मैंने अपने सारे रुपयों में ऐसे आग लगाई कि पूछो मत। यह सब तब शुरू हुआ था जब मुझे मेरी ₹५०,००० की तनख्वाह मिली थी। मैं बहुत खुश था परंतु न जाने क्यों मेरे मन में इसे जुए के द्वारा बढ़ाने का खयाल आया। हो सकता है कि वह लालच के भाव के कारण आया हो, पर मेरी बुद्धि पर तो पत्थर पड़ ही गए थे। मैंने ताश खेलना शुरू किया। धीरे-धीरे मैंने इतना जीत लिया कि अब मैं बैंक से ₹१०,००,००० का क़र्ज़ा लेने के लिए सक्षम था। तो बस, मैंने ले लिया और अपने छोटे-से घर को स्वर्ग-सा बना दिया तथा अपने माँ-बाप के लिए एक ₹१६,००,००० की गाड़ी ले ली। सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा था पर तभी मैंने सारी हदें पार कर दीं। एक दिन, हर रविवार की शाम की तरह मैं ताश के पत्तों के साथ अपनी हमेशा वाली जगह पर पहुँच गया। इस बार मुझे बैंक को पैसे लौटाने के लिए जीतना था। पर न जाने क्यों इस बार मैं बार-बार हार रहा था। तभी, वहाँ पर एक व्यक्ति मेरे पास आया और मुझसे बहुत बड़ी रकम के लिए खेलने के लिए कहा। तब तक मैंने सोच लिया था कि मुझे जुए की जगह अपने बचत खाते से पैसे भर देने चाहिए परंतु इतनी धन राशि को सुन कर मेरा मन फिसल गया। इसके बाद क्या? मैं हार गया। लालच के कारण मैंने जितनी बचत की थी वो सब उड़ गई। जो चीजें मैंने कर्ज़े से खरीदी थीं वह भी सब चला गया और इसी के साथ मेरे परिवार को भी बहुत कष्ट व तकलीफ़ उठानी पड़ी व दुख हुआ। इसी के साथ मैंने ये सीख लिया कि जूए ने तो बड़े-बड़े राजाओं को भी रंक बना दिया था। बुराई कभी जीवन में सफलता का सही रास्ता नहीं है। मैंने प्राण लिया कि इस बुरी लत को त्याग कर मेहनत का रास्ता अपना कर आगे बढ़ूँगा ।

श्रेय 'नौवीं-बी'

52.नहले पर दहला

आन्या शर्मा ‘नौवीं एफ़’

एक बार की बात है एक गाँव में एक व्यापारी रहता था। वह व्यापारी बहुत अमीर था। मगर उसकी अमीरी के बाद भी उसे लालच आ गया। उसने गाँव वालों को बोला "सुनो सुनो गाँव वालों अगर तुम मुझे कोई भी कहानी सुनाते हो जो मैंने आज तक नहीं सुनी तो मैं तुम्हें 50 सोने के सिक्के दूँगा, अगर मैंने वह कहानी सुनी होगी तो आपको मुझे दो सोने के सिक्के देने होंगे।" यह सुनकर भोले गाँव वाले एक-एक करके व्यापारी को अलग- अलग कहानी सुनाते रहे मगर व्यापारी कहानी सुनकर बोलता,"यह कहानी तो मैं जानता हूँ।" और गाँव वाले बहुत निराश हो जाते थे।

उसी बीच एक समझदार लड़का आया और व्यापारी से बोला कि "एक बार आपके पापा ने मेरे पापा की ज़मीन हड़प ली थी, उसकी कीमत आज १०० सोने के सिक्के हैं।" अगर व्यापारी बोलता कि यह कहानी मैंने सुनी है तो उसे बच्चे को १०० सोने के सिक्के देने पड़ते और अगर बोलता कि यह कहानी मैंने नहीं सुनी है तो उसे उस बच्चे को पचास सोने के सिक्के देने पड़ते। अतः व्यापारी को बच्चे को पचास सोने के सिक्के देने पड़े। जिस लालच के कारण उसने इतने लोगों को लूटा, एक छोटे से बच्चे ने उसी लालच से उसे सबक सिखाया। उस दिन से उसने कसम खाई कि जीवन में ऐसी गलती नहीं करेगा क्योंकि सेर को सवा सेर कभी भी मिल सकता है।

अतः हमें कभी भी लालच नहीं करना चाहिए।

यश गुप्ता ‘नौवीं-बी’

53. सुंदर किताब

एक बार की बात है, एक लड़की थी जिसका नाम अनिका था। अनिका ने एक किताब खरीदी। वह किताब बहुत सुंदर थी। एक दिन वह जब उठी तो उसकी किताब उसे मिल नहीं रही थी, उसने हर जगह देखा पर वह मिल न सकी। जब वह स्कूल गई तब उसने अपनी सीट पर देखा तो उसे एक नोट मिला, उस पर यह लिखा हुआ था कि, अपने दोस्त के स्कूल बैग में देखो। अनिका सोच में पड़ गई, यह सोचते हुए कि वह किसके बैग में देखे क्योंकि अनिका के तो बहुत दोस्त थे। फिर उसने सोचा कि अपनी दोस्त शैली के बैग में देख ले। वह अक्षरा की सीट पर गई, उसने शैली से पूछा क्या मेरी किताब तुम्हारे पास है? शैली ने बोला, नहीं, मेरे पास तो नहीं है, लेकिन मैंने किसी को तुम्हारी किताब फाड़कर कूड़ेदान में फेंकते हुए देखा था। फिर अनिका को अचानक एक आवाज़ आई, अनिका उठी और देखा कि वह तो अपने सपनों में यह महसूस कर रही थी।अनिका को उसके सपने ने यह सिखाया कि वह अपनी चीजों को ध्यान से रखेगी और तब से उसने अपनी मनपसंद किताब ही नहीं अपितु अपनी प्रत्येक वस्तु को संभाल कर रखना सीख लिया ।

अनिका जैन 'छठी-ई'

यात्रा

वृतांत

54. सिंगापुर की यात्रा- मेरी यादगार मार्च की छुट्टियाँ

नमस्ते! मेरा नाम शौर्य भारद्वाज है और मैं जी॰डी॰ गोयंका पब्लिक स्कूल, द्वारका, नई दिल्ली की कक्षा 'छठी ए' में पढ़ता हूँ। इस मार्च की छुट्टियों में मैंने अपने परिवार के साथ सिंगापुर की यात्रा की। यह मेरी पहली विदेश यात्रा थी और मैं बहुत खुश था!

यात्रा की तैयारी-

जब माता-पिता ने बताया कि हम सिंगापुर जाएँगे, तो मैं बहुत खुश हुआ! मैंने अपने दोस्तों को बताया और सिंगापुर के बारे में जानकारी इकट्ठा की। पासपोर्ट से लेकर सामान पैक करने तक, मैंने सब काम में मदद की।

हवाई यात्रा-

हमारी उड़ान सुबह जल्दी थी इसलिए हमें रात में उठना पड़ा। यह मेरी पहली हवाई यात्रा थी और जब विमान उड़ा, तो मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा। बादलों के ऊपर से सूर्योदय देखना बहुत सुंदर था।

सिंगापुर में हमारे दिन-

जब हम पहुँचे, तो चांगी हवाई अड्डा बहुत साफ़ और आधुनिक था। हमने एमआरटी ट्रेन से होटल तक का सफ़र किया। हमने सेंटोसा द्वीप पर यूनिवर्सल स्टूडियो देखा, जहाँ मुझे ट्रांसफॉर्मर्स राइड बहुत पसंद आई। 'गार्डन्स बाय द बे' में विशाल 'सुपरट्री' देखे और शाम को रोशनी का शो देखा।

चाइनाटाउन और लिटिल इंडिया में हमने स्वादिष्ट खाना खाया। मरलायन पार्क में सिंगापुर का प्रतीक देखा - आधा शेर और आधा मछली। नाइट सफारी में हमने रात में सक्रिय जानवरों को देखा। साइंस सेंटर में मुझे बहुत मज़ा आया क्योंकि मुझे विज्ञान पसंद है। एस.ई.ए. अक्वेरियम में हज़ारों समुद्री जीव देखे। आखिरी दिन हमने ऑर्चर्ड रोड पर खरीदारी की। मैंने दोस्तों के लिए उपहार और अपने लिए एक टी-शर्ट खरीदी।

सिंगापुर की यात्रा मेरे जीवन का सबसे अच्छा अनुभव रहा। इतना साफ़ और व्यवस्थित देश देखकर मैंने बहुत कुछ सीखा। मैं अपने अनुभव दोस्तों के साथ बाँटने के लिए उत्साहित हूँ और फिर से सिंगापुर जाना चाहूँगा !

धन्यवाद!

शौर्य भारद्वाज 'छठी-ए'

55. राजस्थान के रंग

पिछले वर्ष मुझे राजस्थान के उदयपुर, कुम्भलगढ़ व जवाई जाने का अवसर प्राप्त हुआ। मेरे पापा के भाई-बहन सब अलग-अलग स्थानों से आ रहे थे और उनके बच्चे जो लगभग मेरी उम्र के हैं, वे भी थे, जिससे हम सब मिलने व साथ में घूमने का आनंद उठा सकते थे। हमारी यात्रा जवाई तेंदुआ सफ़ारी से आरंभ हुई। पहले दिन दोपहर में हमने जवाई का सुंदर जलाशय देखा जो उस पूरे इलाके की जलापूर्ति करता है। शाम के समय हम खुली जिप्सी में बैठकर तेंदुए देखने गए। हम चारों बच्चे एक गाड़ी में थे और बहुत देर इंतज़ार करने के बाद जब हमें तेंदुआ व उसका शावक दिखा तो हम बहुत प्रसन्न हुए।

अगले दिन हम कुम्भलगढ़ का किला देखने गए। यह किला अति विशाल है व इसकी दीवार चीन की विश्व प्रसिद्ध 'ग्रेट वॉल' के बाद दुनिया की दूसरी सबसे लंबी दीवार है। कुम्भलगढ़ एक बड़ा साम्राज्य था व उसके अंदरूनी क्षेत्र में बहुत सारे मंदिर, अस्तबल व सैन्य परकोट हैं। गाइड ने हमें बताया कि महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित इस किले में ही मई १५४० में महाराणा प्रताप का जन्म हुआ था।

तीसरे दिन हम उदयपुर की सैर करने निकले। राणा उदय सिंह द्वारा बनाए गए इस नगर को 'झीलों का शहर' भी कहा जाता है। फतह सागर, पिचोला, स्वरूप सागर, रंगसागर और दूध तलाई उदयपुर की प्रमुख झीलें हैं। इसे १५५९ में मेवाड़ राज्य की राजधानी बनाया गया और आज यह राजस्थान का ही नहीं अपितु भारत का प्रमुख दर्शनीय स्थल है। पिचोला झील के किनारे बने जग मंदिर, सिटी पैलेस और जगदीश मंदिर अति दर्शनीय हैं। राजस्थान की उत्कृष्ट कलाकृतियों से भरपूर इन स्थानों को देखकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई। उदयपुर सच में अत्यंत रमणीय स्थल है जिसमें इतिहास, प्रकृति व मानव रचना का संतुलित मिश्रण है।

मैं वहाँ दोबारा अवश्य जाना चाहूँगी।

श्रीनिका देव 'नौवीं-ए'

56. हैदराबाद यात्रा वृत्तांत

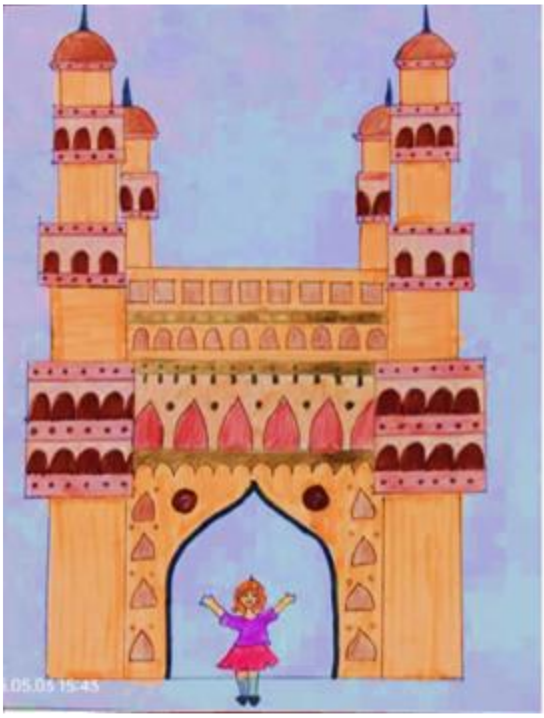

सृष्टि शर्मा 'आठवीं डी'

पिछली गर्मियों की छुट्टियों में हमने हैदराबाद घूमने का कार्यक्रम बनाया। यह शहर अपने ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल और आधुनिक ओरिएन्टेशन से भरपूर है। हैदराबाद की यात्रा ने मुझे यादगार अनुभव प्रदान किया। हमने यात्रा का आरंभ चारमिनार से किया। यह एक भव्य इमारत है, जिसके चारों ओर चार सुंदर मीनारें हैं। वहाँ की कारीगरी की प्रशंसा किए बिना कोई नहीं रह सकता।

हमने गोलकुंडा किला भी देखा। यह भी इतिहास की अमूल्य धरोहर है। वहाँ से हमें शहर का मनोरम दृश्य देखने को मिला। हमने हैदराबाद की प्रसिद्ध बिरयानी का स्वाद भी लिया। लाजवाब स्वाद और खुशबू ने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया।

इसके अलावा हम सलार जंग म्यूजियम, श्री जगन्नाथ मंदिर और हुसैन सागर भी गए। हैदराबाद का समय अलग ही प्रतीत हुआ। वहाँ के लोग बहुत ही नम्र और मेहमान नवाज़ थे। वहाँ की संस्कृति व वास्तुकला ने हमें बहुत प्रभावित किया।

यह यात्रा मेरे लिए बहुत ही ज्ञानवर्धक और रोमांचक रही। मुझे हैदराबाद की यादें सदैव याद रहेंगी। मुझे फिर एक बार वहाँ जाना चाहिए।

शाहिरा 'छठी-ई'

57. वैष्णो देवी की यात्रा

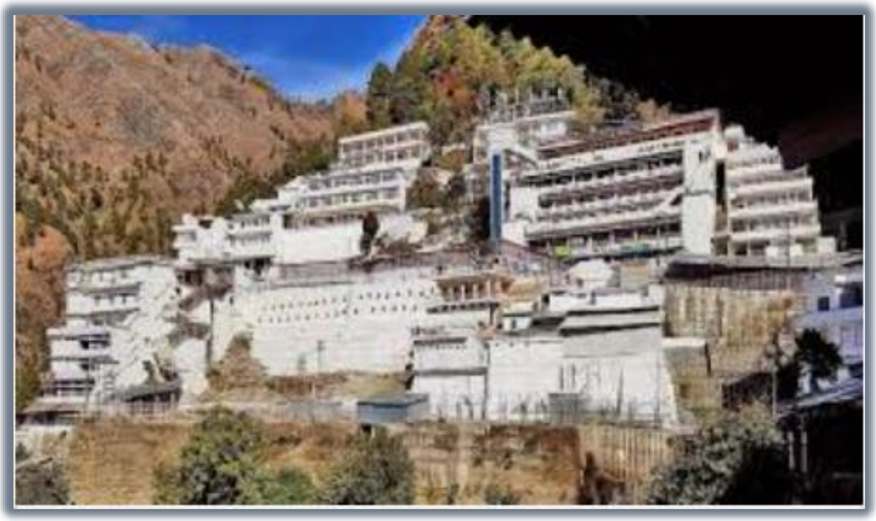

मैं वैष्णो देवी जाने के लिए बहुत उत्साहित हूँ। हम अप्रैल में जा रहे हैं। हम उससे पहले एक -दो बार और गए हुए हैं। हम लोग ट्रेन से जा रहे हैं। पिछली यात्रा में मुझे याद है मैंने और मेरे भाई ने बहुत सारे खेल खेले। हम लोगों ने कुछ चीजें खाई जैसे चिप्स, बिस्कुट आदि ।हम लोग 15 अप्रैल को पहुँचे। वहाँ जाकर हम लोगों ने अपना वैष्णो देवी यात्रा कार्ड लिया और यात्रा शुरू कर दी। मैं तो अधिकांश समय थकते हुए गई। हम दो बजे तक पहुँचे थे और अर्धकुमारी में छः बजे पहुँचे थे। हम लोगों ने हिमकोटी में डोसा खाया और मैंने राजमा चावल खाए और फिर हम चढ़ाई करने लग गए। फिर मुझे ठंड लग रही थी और मैंने मम्मी का शाल पहन लिया फिर हम लोग भवन पहुँच गए। हम लोग 12 बजे पहुँचे। हम लोगों ने दुर्गा भवन में कमरा लिया था। फिर हम लोग सो गए और फिर 3:00 बजे उठे क्योंकि हमें माता रानी की भव्य आरती में जाना था। हम सभी तैयार होकर आरती में पहुँच गए। फिर आरती समाप्त होने के बाद हम घर की ओर लौट चले।

जय माता दी।

माही 'छठी-डी'

58. प्रकृति और ऊर्जा संरक्षण यात्रा

हर साल विद्यालय में नई-नई यात्राओं का आयोजन होता है, लेकिन इस साल की यात्रा प्रकृति और ऊर्जा संरक्षण पर केंद्रित थी। शिक्षकों ने समझाया कि प्रकृति के संसाधनों की रक्षा और ऊर्जा का सही उपयोग कैसे किया जा सकता है।

सुबह, ट्रेन की खिड़की से प्रकृति का सुंदर दृश्य दिखाई दे रहा था। शिक्षक ने बताया कि प्रकृति हमारे जीवन का आधार है, इसलिए इसकी देखभाल और ऊर्जा की बचत करना ज़रूरी है। इससे सभी उत्साहित थे और तकनीकी विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देने की बात समझ में आई।

पहली मंज़िल एक नई सौर ऊर्जा परियोजना थी। वहाँ पहुँचकर देखा कि चारों ओर सौर पैनल लगे हैं, जो सूर्य की किरणों को ऊर्जा में बदल रहे थे। गाइड ने बताया कि ये पैनल एक दिन में लाखों किलोवाट ऊर्जा उत्पन्न करते हैं और पर्यावरण को प्रदूषण से बचाते हैं।

अगला पड़ाव एक सुंदर प्राकृतिक उद्यान था। जहाँ हमें बताया गया किस तरह से हरियाली हमारे स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी है। पेड़-पौधे, जीव-जंतु तालाब न केवल हमें ताज़गी देते हैं। बल्कि हवा और पानी की, शुद्धता को भी सुनिश्चित करते हैं। हमें उन्हें बचाना होगा। इस यात्रा के दौरान हमने विभिन्न कार्यशालाओं में हिस्सा भी लिया और क्विज भी खेला जिससे पर्यावरण और ऊर्जा के विषय में हमारी समझ ओर भी गहराई से बढ़ी।

जब हम स्कूल वापस पहुँचे तो हमारे दिलों में एक नया संकल्प था। 'प्रकृति व ऊर्जा बचाओ।' हमारी यात्रा ने हमें यह संदेश दिया कि तकनीकी प्रगति के साथ-साथ प्राकृतिक मूल्यों को सजाना भी उतना ही आवश्यक है।

आज हम यह संकल्प लेते हैं कि हम अपने घरों में, स्कूल में, समाज में ऊर्जा का सही उपयोग करेंगे और प्रकृति की हरियाली को बनाए रखने में अपना योगदान देगें।

जारूद सोफ़ी 'छठी-ई'

59. मेरी गर्मियों की छुट्टियाँ

इस बार की गर्मियों की छुट्टियाँ मेरे लिए बेहद खास रहीं क्योंकि मैं ऑस्ट्रेलिया गई थी। वहाँ मेरी बड़ी मम्मा रहती हैं, और उनके साथ समय बिताना हमेशा बहुत मज़ेदार होता है। उनके साथ उनकी दो बेटियाँ भी हैं, जो मेरी दीदी हैं और मुझे बहुत सारा प्यार करती हैं। हालाँकि पापा मेरे साथ नहीं जा सके, क्योंकि उन्हें कुछ ज़रूरी काम था, फिर भी मैंने बाकी परिवार के साथ बहुत आनंद उठाया।

ऑस्ट्रेलिया में मेरी दीदी मुझे कई प्रसिद्ध और सुंदर जगहों पर घुमाने ले गईं। हमने सिडनी ओपेरा हाउस देखा, जो बहुत भव्य और आकर्षक था। हम सिडनी हार्बर ब्रिज के पास भी गए और वहाँ की सुंदरता ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। गोल्ड कोस्ट के समुद्री तटों पर हमने खूब मस्ती की, रेत के घर बनाए और लहरों से खेला। मेलबर्न के सुंदर गार्डन और स्ट्रीट आर्ट्स को देखकर भी मुझे बहुत अच्छा लगा। हम वहाँ के प्रसिद्ध मॉल में शॉपिंग करने भी गए और प्ले ज़ोन में खूब खेले।

मेरी दीदी के पास एक बहुत प्यारा कुत्ता है - पॉर्शा। वह दिनभर मेरे साथ खेलता था और हम दोनों की अच्छी दोस्ती हो गई थी। सुबह से लेकर रात तक मैं उसके साथ खेलती रहती थी। एक दिन मैं और मेरी दीदी अकेले ही बाहर घूमने निकले - हम बीच गए, बॉलिंग की और मॉल में समय बिताया। वह दिन बहुत ही खास और यादगार रहा।

इन छुट्टियों ने मुझे न सिर्फ़ नए अनुभव दिए, बल्कि मेरे दिल में कई खूबसूरत यादें भी छोड़ दीं। ऑस्ट्रेलिया की यात्रा और अपने प्रियजनों के साथ बिताया गया समय मेरी गर्मियों की छुट्टियों को हमेशा के लिए खास बना गया।

आराध्या वर्मा 'आठवीं-ई'

60. शिमला-पहाड़ों की रानी

हर वर्ष छुट्टियों में हम, कहीं न कहीं घूमने जाते हैं। इस वर्ष भी हम छुट्टियों में शिमला घूमने गए। शिमला हिमाचल की राजधानी है। शिमला पहाडों और सुंदरता से घिरी हुई खूबसूरत जगह है। मैं अपने मम्मी पापा व छोटे भाई के साथ गई थी। हमने गाड़ी से सफ़र किया। हम एक सप्ताह के लिए गए थे। वहाँ पहुँचकर हमने होटल में खाना खाया और फिर एक स्थानीय कार में बैठकर घूमने गए। कार की खिड़की से सफ़ेद बर्फ से ढके पहाड़, आसमान में सफ़ेद बादल, हरे-भरे पेड़-पौधों का अद्भुत नज़ारा देखकर हमें बहुत बहुत खुशी हुई। वहाँ की ठंडी-ठंडी हवा हमारे दिल और दिमाग को तेरो ताज़ा महसूस करवा रही थी। वहाँ हम रिज ऑफ शिमला, क्राइस्टचर्च, मालरोड, जाखू मंदिर, समर हिल्स, टॉय ट्रेन आदि घूमे। फिर हम कुफ़री गए। कुफरी के पहाड़ों में बर्फ़ गिरी थी। कुफ़री में हमने घुड़सवारी की। वापिस आकर हमने शिमला में बर्फ़ की स्केटिंग की। शिमला का स्वादिष्ट खाना खाया।

मुझे शिमला में इतना आनंद आया कि मन करता है हर छुट्टियों में वहीं जाना चाहिए। आप सब भी सहपरिवार वहाँ ज़रूर जाइए और शिमला की खूबसूरती का आनंद उठाइए ।

शरन्या चोपड़ा 'पाँचवीं-एफ़'

लेख

61. मेरे आदर्श - बाबा साहब भीमराव अंबेडकर

बाबा भीमराव अंबेडकर जी मेरे आदर्श हैं। बाबा अंबेडकर जी का जन्म 14 अप्रैल 1891 में हुआ था। उनके पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल और माँ का नाम भीमाबाई सकपाल था। भीमराव अंबेडकर जी का असली नाम भीवाराम जी सकपाल था। उनकी जन्मतिथि, 14 अप्रैल, को हर साल अंबेडकर जयंती के रूप में मनाई जाती है। उनका विचार था कि 'धर्म मनुष्य के लिए है न कि मनुष्य धर्म के लिए।' उन्होंने भारतीय संविधान का निर्माण किया, जो हमारे देश की संवैधानिक धारा है। डॉ. भीमराव अंबेडकर को बाबा साहेब अंबेडकर के नाम से जाना जाता था। उन्होंने 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' नाम से एक राजनीतिक दल बनाया था। अप्रैल 1990 में उन्हें 'भारत रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा सतारा और बॉम्बे में पूरी की। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से उच्च शिक्षा प्राप्त की। बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर जी का निधन 6 दिसंबर 1956 को हुआ था। उन्होंने दलितों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। इसके अतिरिक्त, उन्हें मधुमेह और गठिया जैसी बीमारियों से भी जूझना पड़ा। बाबा साहेब अंबेडकर जी को बचपन से ही दलित होने के कारण समाज में भेदभाव का सामना करना पड़ा। उन्हें स्कूल में, नौकरी में और सार्वजनिक स्थानों पर भी भेदभाव का सामना करना पड़ा।

अनन्या अरोड़ा'दसवीं-ए'

आप हमेशा मेरे दिल में रहेंगे।

दैविक शोकीन 'चौथी-डी'

62. कौन है वह वीर?

वीर वह नहीं जिसके शरीर में बल हो, वीर वह है जिसकी सोच में बल हो। हमारे देश को उन वीरों की आवश्यकता है, जो हमारे देश को एक नई ऊँचाई पर ले जाएँ, जो समाज को अच्छाई की ओर ले जाएँ। हमारे देश के अनमोल रत्न जैसे महात्मा गांधी जी और अब्दुल कलाम जी ने शिक्षा को एक शस्त्र बताया है, जो हमारी आने वाली पीढ़ी को इतना मज़बूत कर देंगे कि वे एक सुंदर, सशक्त और प्रकाशित भविष्य की कल्पना कर सकें।

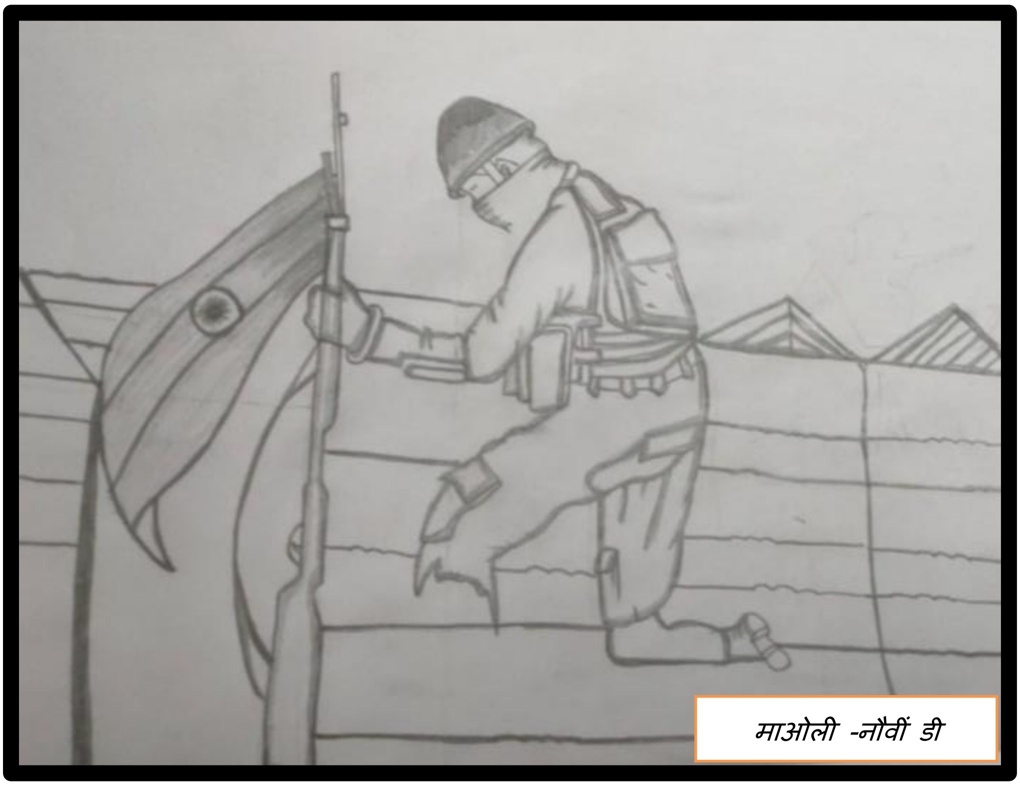

माओली -नौवीं डी

वीरता केवल आपकी शिक्षा से नहीं, बल्कि आपके त्याग से भी झलकती है। हमारे देश को पन्ना धाय जैसे लोगों की ज़रूरत है। पन्ना धाय त्याग की मूर्ति हैं। उन्होंने अपनी संतान को अपने नेत्रों के सामने मरते हुए देखा ताकि वे अपने राज्य के भावी शासक को सुरक्षित रख सकें। उन्होंने मातृ-प्रेम को ठुकरा कर राष्ट्र प्रेम को अपनाया। यह करना सबके बस की बात नहीं। किसी भी माँ के लिए उसका संतान उसका जीवन होती है। तो अपना जीवन, अपनी सुख-शांति को राष्ट्र के लिए समर्पित करना ही वीरों का परिचय होगा। अगर ये लोग वीर नहीं हैं, तो शायद मुझे वीरों की परिभाषा नहीं आती।

"हमारे देश को ऐसे वीरों की आवश्यकता है। वीरता के साथ नैतिकता का होना अति आवश्यक है, नहीं तो वीरता पाशविक प्रवृत्ति के समान हो जाती है।"

अपर्णा दास 'नौवीं-ई'

63. संगति का प्रभाव

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही अपना जीवन व्यतीत करता है इसलिए समाज ही उसे सबसे अधिक प्रभावित करता है। उसका आचरण तथा व्यक्तित्व उन लोगों द्वारा बनता है। जिनकी संगति में वह रहता है। व्यक्ति में सबसे पहले संस्कार उसके परिवार से आते हैं, फिर समाज से आते हैं। एक विद्यार्थी के जीवन में भी संगति का बहुत अधिक महत्त्व है। जैसे अच्छी संगति विद्यार्थी को इसकी उच्च शिक्षा की चरम सीमा तक ले जाती है। वैसे ही बुरी संगति विद्यार्थी के संपूर्ण जीवन को गहरी खाई में ले जाती है। परंतु अच्छी संगति पर कुसंगति का प्रभाव नहीं पड़ता। रहीम जी ने भी कहा है:

***"जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चंदन विष व्याप्त नहीं, लपटे रहत भुजंग॥"***

रहीम जी कहते हैं कि जो अच्छे स्वभाव के मनुष्य होते हैं, उनका बुरी संगति भी कुछ बिगाड़ नहीं पाती है। जैसे ज़हरीले साँप चंदन के वृक्ष से लिपटे रहने पर भी उस पर कोई ज़हरीला प्रभाव नहीं डाल पाते| उसी प्रकार बुरे व्यक्ति चाहे कितना भी अच्छे व्यक्ति के साथ रहें उसको बुरा नहीं कर पाते।

तेजस शर्मा 'छठी-ई'

64. ऊर्जा संरक्षण

हमारी धरती पर जीवन इसलिए संभव है क्योंकि प्रकृति हमें हवा, पानी, मिट्टी और भरपूर पोषण देती है। आज जब तकनीकी प्रगति अपने चरम पर है, तो उसके साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन भी बढ़ गया है। इसलिए हमारे लिए न केवल प्रकृति की रक्षा करना बल्कि उसका नियंत्रित और संतुलित तरीके से उपयोग करना भी आवश्यक है।

प्रकृति हमारे जीवन का आधार है। पेड़-पौधे, नदियाँ, जंगल और जानवरों का संरक्षण करना ज़रूरी है क्योंकि पेड़ पर्यावरण को स्वच्छ रखते हैं। फूल और फल पोषण के स्रोत हैं और जंगल स्थिर जलवायु बनाए रखने में मदद करते हैं। इससे मानव स्वास्थ्य सुनिश्चित होता है, जैव विविधता और पारिस्थितिक संतुलन बना रहता है।

ऊर्जा भी हमारे दैनिक जीवन का एक हिस्सा है। बिजली, गैस और अन्य ऊर्जा स्रोत सीमित हैं। अनावश्यक खपत से वे जल्दी खत्म हो सकते हैं। ऊर्जा के अत्यधिक उपयोग से प्रदूषण, कार्बन उत्सर्जन और ग्लोबल वार्मिंग होती है। ऊर्जा की बचत से वित्तीय बचत भी होती है, जिससे संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है।

इसके लिए हमें बिजली के उपकरणों का कम से कम उपयोग करना चाहिए, प्राकृतिक संसाधनों का अधिक उपयोग करना चाहिए तथा कचरे का पुनर्चक्रण करके प्लास्टिक का उपयोग कम करना चाहिए। विद्यालय या सामुदायिक ऊर्जा सरंक्षण और पर्यावरण सुरक्षा के महत्त्व पर चर्चा कर जागरूकता बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। ऊर्जा बचत के लिए कार्यशालाएँ व सेमिनार से आम लोगों को उसकी महत्ता बता कर जागरूक करना चाहिए। आइए हम सब मिल कर यह संकल्प लें -

"प्रकृति को बचाएँ, ऊर्जा को बचाएँ, जीवन को बचाएँ।"

अपने दैनिक जीवन में इन नियमों को अपना कर एक हरित व संतुलित समाज का निर्माण करें।

जारूद सोफ़ी 'छठी - ई'

65. विवेक

ऐसा क्या है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से भिन्न दिखाता है। शारीरिक संरचना, खूबसूरती या फिर उसका विवेक मेरे अनुसार ये सभी गुण मिलकर मनुष्य, को अन्य प्राणियों से भिन्न दिखाते हैं परंतु ऐसा भी माना जा सकता है कि एकमात्र विवेक ही मनुष्य को अन्य प्राणियों से भिन्न करता है। मानव का विवेक उसे सही और गलत का निर्णय लेने योग्य बनाता है, फिर ऐसा क्या है कि कुछ मनुष्य महान और कुछ तुच्छ माने जाते हैं, राम रावण में भी विवेक था परंतु राम महान और रावण तुच्छ कहलाया। केवल विवेक होने से ही मनुष्य वास्तविक मनुष्य नहीं कहलाता, बात तो तब है जब विवेक जगा हुआ हो । भगवान बुद्ध ने भी अपने विवेक को जगाया था तभी वह संसार में मोह माया को त्याग कर महानता के पथ पर अग्रसर हुए थे और संसार को सत्य और अहिंसा का मार्ग दिखाया था। महान सम्राट अशोक का कलिंग युद्ध के दौरान विवेक जगा और उन्हें ज्ञात हुआ कि वह हिंसा के मार्ग पर हैं। उनके जगे हुए विवेक ने उन्हें अहिंसा के मार्ग पर चलना सिखाया। महात्मा गांधी जी को जब अफ्रीका देश में अपमानित किया गया था तब उनका विवेक जागा और उन्होंने यह ठान लिया था कि देश को आज़ादी की ओर ले जाना अत्यंत आवश्यक है। जिस मनुष्य के भीतर का विवेक जगा नहीं अपितु सोया होता है वह मनुष्य कुछ अंशों में रावण जैसे कार्य कर सकता है। अतः हर मनुष्य को अपने सोए हुए विवेक को जगाना चाहिए।

शक्ति डोगरा 'हिंदी विभाग'

GD GOENKA SCHOOL

Thrive. For Life.

जी. डी. गोयंका पब्लिक स्कूल सेक्टर 10 द्वारका नई दिल्ली